नि॰ नोसोव

मीश्का का दलिया

तथा अन्य कहानियां

अनुक्रम

निकोलाई नोसोव के बारे में

नोसोव की सृजन-क्षमता का परिचय मुझे उनकी किसी भी पुस्तक के पढ़ने के पहले ही मिल गया था।

हुआ कुछ इस तरह।

हमारे घर से बिजली का सामान अचानक बड़े संदेहास्पद ढंग से गायब और ख़राब होने लगा। बिजली के हीटर कूड़े के ढेर पर पड़े मिलते और उनका चीनी मिट्टी की तश्तरी में लगा तार मुड़ा-तुड़ा मिलता। लगभग सारे ही प्लग और स्विच टूट गये, या कम-से-कम उनकी कीलकील उखाड़ ली गई। बिजली के बल्ब तो ऐन हमारी आंखों के आगे से गायब हो जाते थे।

कितनी ही बार मेरा पैर फर्श पर बिखरे पारे की असंख्य चमकती और हीरे की नाईं सख्त गोलियों पर पड़ा। घर के सारे ही थर्मामीटर टूट गये और उनके अवशेष कूड़ादान में पड़े मिले।

लगता था कि घर में किसी बला ने डेरा जमा लिया है और वह हमें गरमी, रोशनी और प्राथमिक चिकित्सा के हर साधन से वंचित करने पर तुली हुई है। इसके बाद डिब्बों और बक्सों की शामत आई। कुछ ही दिन के भीतर वे सब रहस्यमय ढंग से आंख से ओझल हो गये और नष्ट हो गये। और बहुत ही दहशत के साथ मैंने पाया कि यह बला अब मेरी मेज की दराजों की ओर भी आकर्षित हो गई है, क्योंकि उनमें से एक अपनी जगह से अलग मिली और उस पर आरा और रंदा लगने के निशान थे।

इन सब मुसीबतों के बाद टेलीफ़ोन ख़राब हो गया, दरवाज़े पर लगी बिजली की घंटी ने काम करना बंद कर दिया, गरम और ठंडे पानी के नलों में पानी आना बंद हो गया और रसोई में गैस की बू भर गई।

संक्षेप में, हमने अपने को क़यामत के घेरे में पाया।

"मेरी समझ में नहीं आता कि यह सब कैसे हो रहा है," मेरी पत्नी ने चिल्लाकर कहा। "यह सब कौन कर रहा है?"

"पाब्लिक, और कौन?" मेरी बेटी जेन्या ने विश्वासपूर्वक कहा और अपने कंधे मचका दिये।

"और क्यों?"

"इनक्यूबेटर बनाने में।"

"क्या? – क्या?" मैं नहीं समझ पाया।

"इनक्यूबेटर!" जेन्या ने जवाब दिया। "वही, जिसमें कृत्रिम तरीक़े से अंडे सेये जाते हैं।" उसने विद्वानों के से स्वर में समझाया।

"हे भगवान!" मेरी पत्नी ने गहरी सांस लेकर कहा, "हम तो गये काम से!"

"यह धुन उसे लगी कहां से?"

"उसने नोसोव की नक़ल की है।"

"कौन नोसोव?"

"लो, यह भी कोई बात है! तुमने नोसोव को नहीं पढ़ा?.. और ये हैं बुज़ुर्ग लोग!" जेन्या ने अपने खेद को छिपाने का प्रयास किये बिना हमारी ओर देखते हुए कहा। "तुमने 'प्यारा कुनबा' नहीं पढ़ा?"

"नहीं। सो क्या हुआ?"

"यही हुआ!"

बिना ज़रा भी समय गंवाये मैंने नोसोव की यह स्याही के दाग़ों से बेतरह रंगी किताब ली और उसे पढ़ गया, और उसी दिन से मैं इस अद्‌भुत सोवियत लेखक – निकोलाई नोसोव – का पक्का पाठक और प्रशंसक हूं।

इस समय, जबकि निकोलाई नोसोव का सख़्त और बुद्धिमत्तापूर्ण चेहरा इस पुस्तक से मेरी ओर देख रहा है, मैं इस बात पर यक़ीन नहीं करना चाहता कि जल्दी ही वह साठ वर्ष के हो जायेंगे। किसी भी हालत में, कम से कम मेरे लिए यह

बात साफ है कि इस प्रतिभाशाली पुरुष का हृदय चिर युवा, अद्भुत और बाल-सुलभ सरलता से परिपूर्ण है।

नोसोव सदा बच्चों के लिए ही लिखते हैं, किंतु उनके पाठक सभी आयु के हैं। मानव जीवन के उस अद्भुत, आश्चर्यजनक और सुंदर स्वरूप के मनोविज्ञान की उन्हें पूरी-पूरी जानकारी है, जिसे हम 'छोकरा' कहते हैं—वह, जो अब बच्चा नहीं रहा है, लेकिन साथ ही जो अभी तरुण भी नहीं हुआ है। बस, छोकरा। चेखोव ने छोकरों के बारे में शानदार ढंग से लिखा है।

नोसोव भी छोकरों के बारे में शानदार तरीके से लिखते हैं, लेकिन अपनी ही शैली में। नोसोव का छोकरा साधारण छोकरा नहीं है, बरन् एक सोवियत छोकरा है—हमारे महान देश का एक नन्हा नागरिक। नोसोव के छोकरों में सोवियत पुरुष की सभी विशेषताएं मौजूद हैं—उसकी नीतिपरायणता, उसका अनुराग, उसकी बौद्धिक जिज्ञासा, नई-नई बातों का चिर आकर्षण, उसका आविष्कारशील स्वभाव, और बौद्धिक निष्क्रियता और आलस्य का अभाव।

और ये सभी लक्षण छोटे पैमाने पर होने के बावजूद यथार्थत: प्रतीतव्य और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विश्वसनीय हैं और वयस्कों के लिए लिखी कितनी ही पुस्तकों की अपेक्षा कहीं अधिक प्रखर और आकर्षक हैं।

इन शब्दों के साथ मैं निकोलाई नोसोव को आप से परिचित करा रहा हूं और उनकी यह पुस्तक पढ़ने की राय दे रहा हूं—एक ऐसे लेखक की लिखी पुस्तक, जो एक सुविज्ञ और विचारशील कलाकार है, जो विनोद से परिपूर्ण है, जो वस्तुत: श्रेष्ठ कृतियों का लेखक है। 'प्यारा कुनबा', 'कोल्या सिनित्सीन की डायरी', 'स्कूली लड़के' तथा थोड़े-थोड़े पृष्ठों के अन्य कितने ही शब्दचित्र हमारे अथाह बाल साहित्य के गगन में दैदीप्यमान नक्षत्रों की तरह जगमगा रहे हैं।

वालेंतीन कतायेव
(लेखक)

मीश्का का दलिया

पिछली गरमियों में मैं अपनी मां के साथ देहात में रह रहा था। तभी मीश्का भी हमारे साथ रहने के लिए आ गया। उसके आने से मुझे बड़ी ख़ुशी हुई, क्योंकि मैं एकदम अकेला था। मां भी बहुत ख़ुश हुईं।

"मुझे बड़ी ख़ुशी है कि तुम आ गये," उन्होंने कहा। "तुम दोनों एक-दूसरे का साथ दे सकते हो। मुझे कल सुबह ही शहर जाना है। पता नहीं, मेरा लौटना कब हो। तुम दोनों ढंग से रह तो लोगे, न?"

"क्यों नहीं?" मैंने कहा। "हम क्या कोई बच्चे हैं!"

"अपना नाश्ता तुम्हें ख़ुद तैयार करना होगा। दलिया पकाना जानते हो?"

"मैं जानता हूं," मीश्का ने कहा। "इससे आसान और क्या है!"

"मीश्का," मैंने कहा, "ठीक कह रहे हो कि तुम्हें आता है? तुमने दलिया कभी पकाया भी है?"

"परवाह मत करो। मैंने देखा है कि अम्मा कैसे पकाती हैं। इसे मुझ पर ही छोड़ दो। मैं तुम्हें भूखा नहीं मारूंगा। मैं ऐसा दलिया पकाऊंगा कि तुमने ज़िंदगी भर न खाया होगा।"

सुबह मा ने चाय के साथ खाने के लिए रोटी और मुरब्बे का जार हमारे सुपुर्द कर दिया और यह बतला दिया कि दलिया कहां रखा है। उन्होंने यह भी बताया कि इसे पकायें कैसे, लेकिन मैंने उनकी बात नहीं सुनी – "मीश्का जब जानता है, तो मैं क्यों परेशानी में पड़ूं," मैंने सोचा।

इसके बाद मा चली गईं और मीश्का ने और मैंने तय किया कि जाकर नदी मे मछलियां पकड़नी चाहिएं। हमने अपनी बंसियां निकालीं और चारे के लिए कुछ केंचुए खोदकर निकाल लिये।

"लेकिन यह तो बताओ," मैंने कहा, "हम मछली पकड़ने चले गये तो दलिया कौन पकायेगा?"

"पकाने के चक्कर में पड़ना चाहता कौन है?" मीश्का ने कहा। "यह फालतू की माथापच्ची है। हम रोटी और मुरब्बा खा सकते हैं। रोटी काफी है। भूख लगी, तो हम बाद में दलिया पका लेंगे।"

हमने रोटी काटी और उस पर मुरब्बा लगाकर कई सैंडविच बना लिये और उन्हें लेकर नदी की ओर चल दिये। पहले हम खूब तैरे। फिर हम रेत पर लेट गये और अपने सैंडविच खाते रहे। इसके बाद हम मछली पकड़ने बैठ गये। हम घंटों बैठे रहे, पर मछलियों ने चारे को मुंह मारा ही नहीं। बस दस-बारह नन्ही-नन्ही शफरियां ही मुश्किल से हमारे हाथ आई होंगी। हमने लगभग सारा ही दिन नदी पर ही बिता दिया। तीसरे पहर हमें ज़ोरों से भूख लगने लगी और पेट में कुछ डालने के लिए हम घर को भागे।

"तो ठीक है, मीश्का," मैंने कहा। "रसोइये तो तुम ही हो – बताओ, क्या पकेगा?"

"चलो," मीश्का ने कहा, "दलिया ही पका लेते हैं। यही सबसे आसान है।"

"ठीक है," मैंने कहा।

हमने चूल्हा सुलगाया। मीश्का दलिया और पतीली ले आया।

"देखो, पका ही रहे हो, तो कम न पकाना। भूख के मारे मेरी जान निकली जा रही है।"

उसने पतीली को करीब-करीब मुंह तक दलिये से भर दिया और फिर उसमें ऊपर तक पानी भर दिया।

"पानी ज्यादा तो नहीं है?" मैंने कहा।

"नहीं, अम्मा इसी तरीक़े से पकाती हैं। तुम चूल्हे को संभालो और पकाई मुझ पर छोड़ दो।"

इसलिए मैं आग को संभालता रहा और मीश्का दलिया पकाता रहा, मतलब यह कि बैठकर पतीली को देखता रहा, क्योंकि दलिया अपने-आप पक रहा था।

जल्दी ही अंधेरा हो गया और हमें लैंप जलाना पड़ा। दलिया पकता ही रहा। अचानक मेरी निगाह ऊपर गई और मैंने देखा कि पतीली का ढक्कन उठ रहा है और दलिया बाहर निकल रहा है।

"ऐ, मीश्का," मैंने कहा। "दलिये को क्या हो रहा है?"

"क्यों, उसे क्या हो रहा है?"

"वह तो पतीली से ही बाहर भागा जा रहा है!"

मीश्का ने लपककर एक कड़छी ली और दलिये को पतीली में वापस ठेलना शुरू किया। वह इसी में लगा रहा, पर वह फूलता ही चला गया और बाहर निकलता ही रहा।

"पता नहीं इसे क्या हो गया—शायद यह पक गया है?"

मैंने एक चम्मच में लेकर ज़रा सा दलिया चखा, लेकिन वह अभी भी सख़्त और सूखा था।

"सारा पानी कहां गया?"

"पता नहीं," मीश्का ने कहा। "मैंने तो काफ़ी डाला था। कहीं पतीली में छेद तो नहीं है?"

हमने पतीली उठाकर उसे अच्छी तरह से देखा पर उसमें छेद का कहीं नाम भी न था।

"पानी उड़ गया होगा," उसने कहा। "हमें और पानी डालना होगा।"

उसने पतीली से निकालकर कुछ दलिया एक प्लेट में उंढेल दिया। पानी के लिए जगह करने के लिए उसे अच्छा-ख़ासा दलिया निकालना पड़ा। इसके बाद हमने पतीली को फिर चूल्हे पर चढ़ा दिया। वह पकता रहा और ज़रा ही देर बाद फिर पतीली से निकलने लगा।

"भई वाह!" मीश्का ने हैरानी से कहा, "यह पतीली में क्यों नहीं टिकता?"

उसने अपनी कड़छी उठाई और जल्दी-जल्दी कुछ दलिया और निकालकर उसमें प्याला भर पानी और डाल दिया।

"देखा," उसने कहा, "और तुम यह कह रहे थे कि पानी ज्यादा तो नही है!"

दलिया पकता ही रहा और मानें या न मानें, जरा ही देर बाद उसने फिर ढक्कन उठा दिया और पतीली से निकलने लगा!

मैंने कहा, "तुमने इसमें दलिया ज्यादा डाल दिया होगा। यही बात है। पकते-पकते वह फूल जाता है। पतली में उसके लिए गुंजाइश नहीं है।"

"यही बात है," मीश्का ने कहा। "सब तुम्हारी ही गलती है। तुम्हींने तो ज्यादा डालने के लिए कहा था, क्योंकि भूख के मारे तुम्हारी जान निकली जा रही थी। याद है?"

"मुझे क्या पता कि कितना डालें? पकाना तो तुम्हें ही आता है, न!"

"हा, आता है। अगर तुम बीच में न पड़े होते, तो मैं कभी का पका भी चुका होता।"

"ठीक है, पकाओ। मैं अब एक बात भी नही कहूगा।"

मैं तैश मे आकर चला गया और मीश्का दलिया पकाता रहा, मतलब यह कि वह दलिया निकालता और पानी मिलाता रहा। जरा ही देर मे मेज़ पर अधपके दलियें से भरी प्लेटें ही नज़र आने लगी। और हर ही बार वह उसमें और पानी डालता रहा।

आखिर मेरा सब्र खत्म हो गया।

"तुम ठीक से नही पका रहे। इस रफ्तार से तो दलिया सुबह तक भी तैयार न होगा।"

"ठीक है, बड़े-बड़े होटलों में भी तो इसी तरह पकाया जाता है। क्यों, तुम्हें यह बात मालूम नहीं थी, न? वहा खाना रात को ही पका लिया जाता है, जिससे सुबह वह तैयार मिले।"

"होटलों के लिए यह ठीक होगा। उन्हें जल्दी करने की जरूरत नही, क्योंकि उनके पास ढेरों खाना होता है।"

"हमें भी जल्दी करने की क्या है!"

"न, क्या है! और मैं भूखों मरा जा रहा हू। फिर, सोने का वक़्त भी हो गया है। देखते हो, रात कितनी बीत गई है?"

पतीली मे एक गिलास पानी और उढेलते हुए उसने कहा, "सोने को तुम्हें काफी मिल जायेगा।"

अचानक मेरी समझ मे आ गया कि गलती क्या है।

"अगर ठंडा पानी ही मिलाते रहे, तो वेशक यह नहीं पक सकता।"

"लो! तुम्हारे ख़याल से दलिया विना पानी के पकाया जा सकता है?"

"नहीं। लेकिन मेरा ख़याल है कि पतीली में दलिया अभी भी ज़्यादा है।"

मैंने पतीली उतारी, उसमें से आधा दलिया निकाला और मीश्का से उसे पानी से भर देने को कहा।

उसने मग्गा लिया और वाल्टी के पास गया।

"मार दिया!" उसने कहा, "पानी तो ख़त्म हो गया!"

"अव क्या होगा? वाहर एकदम अंधेरा है। हम कुएं तक भी नहीं पहुंच सकते।"

"वकवास! मैं चुटकी वजाते कुछ ले आता हूं।"

मीश्का ने माचिस ली। वाल्टी के. कुंडे में रस्सी वांधी और कुएं पर चला गया। कुछ मिनटों में वह लौट आया।

"पानी कहां है?" मैंने पूछा।

"पानी? – वहां कुएं में।"

"वको मत। वाल्टी का तुमने क्या किया?"

"वाल्टी? वह भी कुएं में है।"

"कुएं में?"

"हां, यही वात है।"

"मतलव, तुमने उसे गिरा दिया?"

"ठीक।"

"गधे कहीं के! इस तरह तो हम भूखे मर जायेंगे। अव हम पानी कैसे लायेंगे?"

"हम केतली में ला सकते हैं।"

मैंने केतली उठाई। "लाओ, रस्सी दो।"

"मेरे पास नहीं है।"

"कहां है?"

"वहीं, उसके भीतर।"

"किसके भीतर।"

"कुएं के।"

"तो तुमने वाल्टी के साथ रस्सी भी गिरा दी न?"

"ठीक वात है।"

हमने ग्रौर रस्सी ढूंढना शुरू की, पर मिली नहीं।

"मैं जाकर पड़ोसियों से माग लाता हूं," मीश्का ने कहा।

"न, नहीं ला सकते," मैंने कहा। "जरा घड़ी देखो। सब कोई कब के सो चुके हैं।"

मौके की बात, मुझे बुरी तरह से प्यास लगने लगी। प्यास के मारे मेरी जान जाने लगी।

मीश्का ने कहा, "यही बात है। पानी नहीं होता, तो बुरी तरह प्यास लगती है। रेगिस्तान मे भी लोगों को हमेशा इसीलिए प्यास लगती है कि वहा पानी बिलकुल नहीं होता।"

"रेगिस्तानों की बात छोड़ो," मैंने कहा। "ग्रब जरा कहीं से रस्सी ढूंढकर लाग्रो।"

"रस्सी कहां से लाऊं? सभी जगहें तो मैंने छान मारी हैं। सुनो, मछली पकड़ने की वंसी की डोर का इस्तेमाल क्यों न कर लें?"

"वह इतनी मजबूत है?"

"मेरे खयाल से तो है।"

"ग्रौर न हुई, तो?"

"न हुई, तो टूट जायेगी।"

हमने डोर को खोला, उसे केतली में बांधा ग्रौर कुएं पर गये। मैंने केतली को कुएं में डाला ग्रौर उसे पानी से भर लिया। डोर ऐसे तनी हुई थी, जैसे वायलिन का तार।

"टूट जायेगी," मैंने कहा, "देख लेना।"

"ग्रगर हम इसे बहुत-बहुत होशियारी से खींचें, तो शायद न टूटे।"

मैंने उसे भरसक होशियारी के साथ खींचना शुरू किया। ग्रभी वह पानी से उठी ही थी कि छपाक् की ग्रावाज ग्राई ग्रौर केतली जाती रही।

"टूट गई क्या?" मीश्का ने पूछा।

"ग्रौर नहीं तो क्या! ग्रब हम पानी कैसे भरेंगे?"

"चलो, समोवार* में भरने की कोशिश करें," मीश्का ने कहा।

---

*चाय का पानी उबालने का बड़ा बरतन। – ग्रनु०

"नहीं। इससे अच्छा तो यही रहेगा कि उसे सीधा कुएं में फेंक दें। इसमें परेशानी भी कम होगी। फिर, अब रस्सी भी तो नहीं है।"

"ठीक है, तो पतीली ले लो।"

"हमारे पास फेंकने को पतीलियां नहीं हैं," मैंने कहा।

"ठीक है, तो गिलास में ही भरने की कोशिश करो।"

"क्या तुम सारी रात गिलास-गिलास भर पानी खींचने में ही लगा देना चाहते हो?"

"लेकिन हम और कर भी क्या सकते हैं? हमें दलिये की पकाई भी तो पूरी करनी ही है। फिर मुझे बुरी तरह प्यास भी तो लग रही है।"

"चलो, मग्गे में भरने की कोशिश करते हैं," मैंने कहा। "किसी भी हालत में वह गिलास से तो बड़ा है ही।"

हम घर गये और डोर को मग्गे में इस तरह बांधा कि वह उलटे नहीं। फिर हम कुएं पर लौट आये। हम लोग भर पेट पानी पी चुके, तो मीश्का ने कहा:

"यही होता है—जब प्यास लगती है, तो लगता है कि जैसे सारे समुद्र को ही पी डालेंगे, लेकिन जब पानी पीना शुरू करो, तो मग्गा भर ही काफ़ी हो जाता है। वजह यही है कि आदमी स्वभाव से ही लालची होता है।"

"बकना बंद करो और पतीली यहीं ले आओ। हम उसे कुएं से पानी खींचकर यहीं भर सकते हैं। इस से दसियों बार आने-जाने का पचड़ा बच जायेगा।"

मीश्का पतीली ले आया और उसने उसे कुएं की ऐन जगत पर रख दिया। मेरी कुहनी से वह गिरते-गिरते बची।

"गधे कहीं के," मैंने कहा। "इसे मेरी कुहनी के ऐन नीचे रखने की क्या तुक है? इसे हाथ में लेकर कुएं से जितनी दूर हो सके, खड़े हो जाओ, वरना तुम इसे भी कुएं में फेंक दोगे।"

मीश्का ने पतीली उठा ली और कुएं से दूर हट गया। मैंने उसे भर दिया और हम घर लौट आये। अब तक दलिया एकदम ठंडा हो चुका था और आग बुझ चुकी थी। हमने उसे फिर सुलगाया और पतीली को चूल्हे पर रख दिया। काफ़ी देर के बाद उसने उबलना शुरू किया। फिर वह धीरे-धीरे गाढ़ा हो गया और फच-फच करने लगा।

"सुनते हो?" मीश्का ने कहा। "बस, ज़रा ही देर और है—फिर हमें ऐसा दलिया मिलेगा कि कहना नहीं!"

मैंने चम्मच पर जरा सा दलिया लेकर चखा। वह ऐसा बदजायक़ा था कि बस! उसमें जलांध आ रही थी और उसका स्वाद कड़ुआ था। हम नमक डालना भी भूल गये थे। मीश्का ने भी चखा और तुरत थूक दिया।

"नहीं," उसने कहा। "इसे खाने से तो भूखे मर जाना अच्छा है।"

"इसे खाया, तो तुम सचमुच मर जाओगे।" मैंने कहा।

"लेकिन हम करें क्या?"

"मुझे क्या मालूम!"

"गधे हैं हम!" मीश्का ने कहा। "मछलियों की तो हमें याद रही ही नहीं।"

"इतनी रात में हम मछली पकाने के पचड़े में नहीं पड़ेंगे। जरा ही देर में सुबह होनेवाली है।"

"हम उन्हें उबालेंगे थोड़े ही। हम तो तल लेंगे। मिनट भर में तैयार हो जायेंगी—देख लेना।"

"चलो, ठीक है," मैंने कहा। "लेकिन इसमें भी अगर दलिये जितनी ही देर लगी, तो भई मैं तो बाज़ आया।"

"पांच मिनट में तैयार हो जायेंगी—तुम देख लेना।"

मीश्का ने मछलियों को साफ़ करके कढ़ाई में डाला। जरा ही देर में कढ़ाई गरम हो गई और मछलियां उसी में चिपक गईं। उसने उन्हें खींचकर निकालने की कोशिश की और उनका भुरता ही बना दिया।

मैंने कहा, "तेल के बिना भी कभी किसी ने मछलियां तली हैं?"

मीश्का ने तेल की बोतल उठाई और कढ़ाई में तेल उंडेलकर उसे सीधा आग पर रख दिया, जिससे मछलियां जल्दी पक जायें। तेल गरम होकर तड़कने लगा और अचानक उसमें आग लग गई। मीश्का ने लपककर कढ़ाई उठा ली। मैं उसपर पानी डालना चाहता था, लेकिन घर में बूंद भर भी पानी नहीं था, इसलिए जब तक सारा तेल खत्म नहीं हो गया, वह जलता ही रहा। कमरा धुएं से भर गया और मछलियों की जगह बस कुछ जले हुए कोयले ही बच रहे।

"तो," मीश्का ने कहा, "अब क्या तलें?"

"जी नहीं, अब कुछ नहीं तला जायेगा। अच्छे-खासे खाने को खराब करने के अलावा इसमें तुम घर को भी फूंक दोगे। आज दिन के लिए तुम काफ़ी पढ़ाई कर चुके।"

"लेकिन हम खायेंगे क्या?"

हमने कच्चा दलिया खाने की कोशिश की, पर उसमें कोई मज़ा नहीं आया। हमने कच्चा प्याज़ खाने की कोशिश की, लेकिन वह कड़ुवा था। हमने तेल खाकर देखा और क़रीब-क़रीब उलटी ही करने को हो गये। आख़िर हमें मुरब्बे का बरतन मिल गया और हमने उसे सफ़ाचट कर दिया और फिर जाकर सो गये। अब तक काफ़ी रात बीत गई थी।

सुबह हम भूख से मरते उठे। मीश्का कुछ दलिया पकाना चाहता था, लेकिन मैंने जब उसे दलिया निकालते देखा, तो मुझे कंपकंपी आ गई।

"ख़बरदार जो हाथ लगाया," मैंने कहा। "मैं अपनी मकान मालिकिन नताशा मौसी से जाकर कह देता हूं कि कुछ दलिया पका दें।"

हमने नताशा मौसी के पास जाकर उन्हें सारा क़िस्सा सुनाया और उनसे वायदा किया कि वह हमें दलिया पकाकर दे देंगी, तो हम उनके बग़ीचे की निराई कर देंगे। उन्हें हम पर तरस आ गया। उन्होंने हमें दूध और गोभी के समोसे दिये और दलिया पकने रख दिया। हमने जो खाना शुरू किया, तो ऐसे कि रुके ही नहीं। नताशा मौसी के लड़के वोल्का की आंखें हमें खाते देख फटी जा रही थीं।

आख़िर हमारा पेट भरा। नताशा मौसी ने हमें कांटा दिया और रस्सी भी। हम कुएं से बाल्टी और केतली निकालने गये। हमें उन्हें निकालते-निकालते काफ़ी देर लग गई, लेकिन अच्छी बात यही रही कि सभी चीज़ें मिल गईं। इसके बाद मीश्का, वोल्का और मैंने मिलकर नताशा मौसी के बाग़ की निराई की।

मीश्का ने कहा, "निराई करने में क्या है! हर कोई इसे कर सकता है। यह तो एकदम आसान है। कम-से-कम दलिया पकाने से तो यह आसान है ही।"

लैंडी
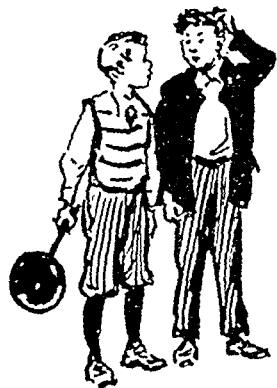
इस बार गरमियों में मीश्का और मैंने देहात में खूब मौज उड़ाई। देहात मुझे सचमुच बहुत पसंद है। वहां आप हर तरह की मजेदार बातें कर सकते हैं, जैसे खुमी या बेर चुनते जंगल में घूमना, नदी में नहाना और धूप में लोट लगाना और नहाने से मन भर जाये, तो मछली पकड़ना। जब मां की छुट्टियां खत्म हो गई और शहर लौटने का समय आ गया, तो मीश्का को और मुझे बहुत दुख हुआ। हम इतने दुखी लगते थे कि नताशा मौसी को हम पर तरस आ गया और उन्होंने मां को मीश्का और मुझे कुछ दिन वहीं रहने देने के लिए राजी कर लिया। उन्होंने कहा कि मां को फ़िक्र करने की जरूरत नहीं, वह हम लोगों की अच्छी तरह देखभाल करेंगी। इसलिए मां आख़िर में तैयार हो गई और हमारे बिना शहर लौट गई और मीश्का और मैं नताशा मौसी के साथ रह गये।

नताशा मौसी के पास एक कुतिया थी, जिसका नाम था दिआना। जिस दिन मां गई, उसी दिन दिआना ने पिल्ले दिये। पूरे छः–पांच काले थे और उन पर कत्थई चित्ते थे और एक बस कान पर एक काले दाग़ को छोड़कर पूरा कत्थई था। जब नताशा मौसी ने पिल्लों को देखा, तो वह बोलीं:

"हे भगवान, यह कुतिया तो जी का जंजाल है। यह तो बस पिल्ले ही जनती रहती है। मैं इनका क्या करूंगी? मुझे इन्हें नदी में फेंकना पड़ेगा।"

"नहीं नताशा मौसी," हमने उन की ख़ुशामद की। "ये भी तो जीना चाहते हैं। इन्हें मत बहाइये। इससे अच्छा तो यही है कि इन्हें अपने पड़ोसियों को दे दीजिये।"

"पड़ोसियों के पास अपने कुत्ते हैं," नताशा मौसी ने कहा। "मैं इतने सारे कुत्ते नहीं रख सकती।"

मीश्का और मैंने बहुत ख़ुशामद की। हमने कहा कि पिल्ले कुछ बड़े हो जायें, तो हम ख़ुद उनके लिए रखने की जगहें ढूंढ निकालेंगे। आख़िर नताशा मौसी पिघल गईं और बोलीं कि हम पिल्लों को रख सकते हैं।

जल्दी ही पिल्ले बड़े हो गये और बाग़ में दौड़ने और असली कुत्तों की तरह भौंकने लगे। उनके साथ खेलने में मीश्का को और मुझे बड़ा मजा आता।

नताशा मौसी हमें पिल्ले औरों को दे देने के हमारे वायदे की याद दिलाती रहतीं, लेकिन हमें दिआना के लिए दुख होता–अपने बच्चों के बिना वह दुखी होगी।

"मुझे पिल्ले तुम्हें देने ही नहीं चाहिए थे", नताशा मौसी ने कहा। "अब ये सारे के सारे कुत्ते मेरे मत्थे पड़ जायेंगे। इन सबका पेट मैं कहां से भरूंगी?"

इसलिए मीश्का को और मुझे पिल्लों के लिए नये घरों की तलाश में निकलना पड़ा। बाप रे, कितनी मुसीबत हमें उठानी पड़ी! कोई भी उन्हें लेने को तैयार न था। कई दिन तक हम घर-घर जाते रहे और बड़ी परेशानी के बाद हमने तीन को किसी तरह घरों में रखवा दिया। दो पिल्लों को पास के एक गांव के लोगों ने ले लिया। इससे एक बाक़ी रह गया–वही, कान पर काले दाग़वाला पिल्ला। हमें वही सबसे अच्छा लगता था। उसका चेहरा ऐसा सुंदर था और आंखें इतनी सुंदर, बड़ी और गोल थीं कि लगता था, जैसे उसे किसी बात पर अचरज हो रहा हो। मीश्का से उससे जुदा होना बरदाश्त न हो रहा था और इसलिए उसने अपनी मां को एक चिट्ठी लिखी:

"प्यारी अम्मा," उसने लिखा। "मैं एक नन्हा-सा पिल्ला पालना चाहता हूं। वह बड़ा ही प्यारा है, एक कान को छोड़कर, जिस पर एक काला दाग़ है, वह कत्थई

रंग का है और मैं उसे बहुत प्यार करता हूं। अगर आप मुझे उसे पालने दें, तो मैं वायदा करता हूं कि मैं बड़ा अच्छा लड़का बनूंगा और स्कूल में अच्छे नंबर लूंगा और मैं उसे खूब सिखाऊंगा, जिससे वड़ा होकर वह बड़ा बढ़िया और लंबा-चौड़ा कुत्ता निकलेगा।"

हमने उसका नाम लैंडी रखा। मीश्का ने कहा कि वह कुत्तों के बारे में एक किताब खरीदेगा और उसे ढंग से ट्रेनिंग देगा।

* * *

कई दिन बीत गये, पर मीश्का की मा का जवाब न आया। और आख़िर जब उनकी चिट्ठी आई, तो उसमें लैंडी के बारे में कुछ न था। उन्होंने हमें फौरन चले आने को लिखा, क्योंकि उन्हें हमारी फ़िक्र हो रही थी। मीश्का और मैंने उसी दिन चलने की तैयारी कर ली। उसने अनुमति के लिए रुके बिना ही लैंडी को साथ लेने का निश्चय कर लिया, क्योंकि आख़िर इसमें उसका क्या क़सूर था कि उसकी मा ने उसकी चिट्ठी का जवाब नहीं दिया।

"तुम इसे साथ नहीं ले जा सकते," नताशा मौसी ने कहा। "कुत्तों को रेलगाड़ी पर नहीं जाने दिया जाता। कंडक्टर ने देख लिया, तो तुम्हें जुर्माना देना पड़ेगा।"

"कंडक्टर उसे देखेगा ही नहीं," मीश्का ने जवाब दिया। "हम उसे अपने सूटकेस में छिपा लेंगे।"

मीश्का की चीज़ों को हमने निकालकर मेरे थैले में भर दिया, सूटकेस में लैंडी के सांस लेने के लिए कई छेद कर दिये, भीतर कुछ रोटी और कुछ गोश्त रख दिया, ताकि भूख लगने पर उसके काम आ जाये और स्टेशन की तरफ़ चल दिये। नताशा मौसी हमें विदा करने आई।

स्टेशन तक सारे रास्ते लैंडी चूहे की तरह ख़ामोश रहा। जब नताशा मौसी हमारे टिकट ख़रीदने गई, तो हम ने यह देखने के लिए सूटकेस खोला कि वह क्या कर रहा है। वह तले में चुप बैठा हमारी तरफ़ आंखें झपका रहा था।

"अच्छे कुत्ते!" मीश्का ने ख़ुश होकर कहा, "अक्लमंद पिल्ले! देखा, वह जानता है कि कैसे रहना चाहिए!"

हमने उसे कुछ सहलाया और फिर सूटकेस बंद कर दिया। गाड़ी के आने पर नताशा मौसी ने हमें भीतर अच्छी तरह पहुंचाकर विदा ली। हमें डिब्बे के एक कोने में एक खाली सीट मिल गई। उसमें बस एक बूढ़ी औरत और थी, जो सामने की

सीट पर बैठी ऊंघ रही थी। मीश्का ने सूटकेस सीट के नीचे खिसका दिया। गाड़ी चल दी और हमारा सफ़र शुरू हो गया।

* * *

शुरू-शुरू में कोई गड़बड़ नहीं हुई। लेकिन अगले स्टेशन पर मुसाफ़िरों की भीड़ आ गई। दो चोटियां किये लंबे पैरोंवाली एक लड़की पूरे जोर से चिल्लाती हुई हमारे ख़ामोश कोने में दौड़ती हुई आ गई:

"नाद्या चाची! फ़ेद्या चाचा! जल्दी आओ, यह रही जगह!"

नाद्या चाची और फ़ेद्या चाचा गलियारे से हमारी सीट पर आ गये।

"जल्दी करो, जल्दी करो!" लड़की ने चहकना शुरू किया। "जल्दी से बैठ जाओ। मैं नाद्या चाची के साथ बैठूंगी। फ़ेद्या चाचा सामने लड़कों के साथ बैठ जायेंगे।"

"चुप, लेनोच्का, चुप। इतना शोर मत कर," नाद्या चाची ने कहा और वे दोनों सामने बूढ़ी औरत के बराबर बैठ गये। फ़ेद्या चाचा ने अपना सूटकेस सीट के नीचे घुसेड़ दिया और हमारे बराबर बैठ गये।

लेनोच्का ने तालियां बजाते हुए कहा, "वाह, है न बढ़िया बात—एक तरफ़ तीन आदमी और दूसरी तरफ़ तीन औरतें!"

मीश्का और मैं खिड़की के बाहर देखने लगे। कुछ समय तक तो बस पहियों की खड़खड़ाहट और आगे इंजन की फक-फक की आवाजें ही आती रहीं। लेकिन तभी अचानक सीट के नीचे से सरसराने की और चूहे के कुतरने जैसी कोई आवाज़ आई।

"यह लैडी है," मीश्का ने फुसफुसाकर कहा। "कहीं कंडक्टर इधर ही आ गया, तो?"

"शायद मिनट भर में ही यह चुप हो जाये।"

"लेकिन मान लो उसने भौंकना शुरू कर दिया, तो?"

कुतरने की आवाज़ आती रही। वह जरूर सूटकेस में छेद करने की कोशिश कर रहा होगा।

"चाची, ओ चाची, चूहा!" अपने पैर उठाते हुए बेवक़ूफ़ लेनोच्का चिल्लाई।

"बकवास!" उसकी नाद्या चाची ने कहा। "गाड़ी में भी कहीं चूहे होते हैं!"

"होगा, लेकिन यहां तो है! सुन नहीं रहीं?"

मीश्का जितने जोर से हो सकता था, खांसा और सूटकेस को अपने पैर से ठोकर मारी। मिनट-दो मिनट लैडी चुप रहा, फिर उसने हलकी आवाज़ में किकियाना शुरू कर दिया। हर कोई हैरान नज़र आने लगा। लेकिन मीश्का ने फ़ुर्ती

ने खिड़की के काच पर अपनी उगलियां चलाकर चू-चू की आवाज़ पैदा करना शुरू कर दी। फेद्या चाचा ने मुड़कर मीश्का की तरफ़ गुस्से से देखा।

"बंद करो, मिस्टर!"

तभी डिब्बे में कुछ आगे कोई अकार्दियों बजाने लगा और कुछ देर के लिए कोई और आवाज़ सुनाई देना रुक गया। लेकिन जल्दी ही बाजा बंद हो गया।

"सुनो," मीश्का ने फुसफुसाकर मुझसे कहा, "हमें गाना गाना शुरू कर देना चाहिए।"

"लेकिन ये लोग क्या सोचेंगे?" मैंने विरोध करते हुए कहा।

"ठीक है, तो हमें कविता-पाठ शुरू कर देना चाहिए, जैसे हम उसे कंठस्थ कर रहे हों।"

"ठीक है, तुम शुरू करो।"

सीट के नीचे कोई किकियाया। मीश्का ने फौरन खांसकर जल्दी-जल्दी शुरू किया :

> ऊपर नभ में सूरज चमके,
> नीचे है मैदान हरा
> वसंत ऋतु का आना होता
> प्रमुदित है संपूर्ण धरा!

मुसाफिर हंस पड़े और किसी ने कहा, "लो, मौसम पतझड़ का आ रहा है और यहां वसंत लाया जा रहा है।"

लेनोच्का चहकी।

"हैं न मज़ेदार लड़के!" उसने कहा। "जब ये चूहों की नकल या चूं-चूं की आवाज़ पैदा करना बंद कर देते हैं, तो कविता-पाठ करते हैं।"

लेकिन मीश्का ने कोई ध्यान न दिया। एक कविता खत्म होते ही उसने दूसरी शुरू कर दी और अपने पैरों से ताल देता गया :

> सुरभित होता मेरा उपवन
> फूलों की शोभा उमड़ रही है,
> तोता-मैना चहक रहे हैं
> क्यारी-क्यारी खिली हुई है।

"लीजिये, अब गरमी आ गई!" मुसाफ़िरों ने हंसकर कहा। "बगीचा महक रहा है।"

अगले ही क्षण मीश्का सीधा सरदी में जा पहुंचा :

आ गया शिशिर, जा रहा फिर निज
हिमगाड़ी पर प्रमुदित किसान —
श्वेत हिम से धरा पटी है, ख़ुश होकर
दौड़ रहा है घोड़ा उसका सीना तान...

और उसके बाद उसने सभी ऋतुओं को गड़मड़ कर दिया और शिशिर के एकदम बाद पतझड़ आ गया :

कैसा नीरस, कैसा म्लान
ऊपर छाये बादल घनघोर,
वर्षा, पानी, बूंदाबांदी,
छप-छप, कीचड़, चारों ओर!..

तभी लैडी ने एक कातर पुकार की और मीश्का ने अपनी पूरी आवाज़ में कहा :

इतनी जल्दी क्यों आ गये शरद्
लेकर अपनी शीत कटार —
उष्मातुर जन कर रहे अभी तक
सुखद धूप की तीव्र पुकार!

सामने की सीट पर जो बूढ़ी औरत ऊंघ रही थी, उसने जागकर अपना सिर हिलाया और बोली, "ठीक कहते हो बेटे, बिलकुल ठीक! पतझड़ जल्दी ही आ गया है। बच्चे धूप में कुछ और खेलना चाहते हैं, लेकिन गरमियां तो बीत गईं। तुम बेटे, सच बहुत अच्छा पाठ करते हो।"

उसने आगे झुककर मीश्का का सिर सहलाया। मीश्का ने सीट के नीचे अपने पैर से मेरे पैर को ठोकर देकर मुझे कविता पाठ शुरू करने के लिए कहा, लेकिन

सारी कोशिश करने पर भी मैं एक कविता को भी याद न कर सका। मुझे एक गाने की ही याद आ पाई, इसलिए मैंने पूरी आवाज़ में अलापना शुरू कर दिया :

कितनी सुंदर मेरी कुटिया—
नई-नई है, नई-नई...

फेद्या चाचा ने गुस्से में कहा, "हे भगवान! लो एक और गलेबाज आ गया!"

नेनोच्का मुंह बिचकाकर बोली, "धत्! ऐसे बेवक़ूफ़ी भरे गाने भी कोई गाता है!"

मैंने उस गाने को सर्राटे के साथ दो बार दुहराकर एक और शुरू कर दिया :

ज़ंजीरों में बंधा मैं बंदी बैठा हूं
ज़ंजीरों में ही मैं ने शैशव लांघा
कभी न मुक्त विहग सा नभ में ..

"सचमुच तुम्हें तो जेल में ही डाल देना चाहिए," फ़ेद्या चाचा ने गुर्राते हुए कहा, "औरों को परेशान करने की यही सज़ा है!"

"लेकिन फेद्या," नाद्या चाची ने कहा, "लड़के कविताएं सुनाना चाहते हैं, तो क्यों न सुनायें!"

लेकिन फेद्या चाचा कुड़मुड़ाते और माथे को मलते ही रहे, जैसे उनके सिर में दर्द हो रहा हो। मैं सांस लेने को रुक गया और मीश्का ने पाठ जारी रखा। इस बार वह कम तेज़ी से और भावों के साथ पाठ कर रहा था :

शांत निशाएं उक्रइना की
निरभ्र गगन औ' टिम-टिम तारे...

मुसाफ़िर ठहाके लगाकर हंसने लगे, "तो हम इस वक्त उक्रइना में हैं! अब यह हमें कहां ले जायेगा?"

अगले स्टेशन पर कुछ और लोग गाड़ी में आ गये। "सुनो इस छोकरे का कविता-पाठ!" उन्होंने एक-दूसरे से कहा। "सफ़र मज़ेदार रहेगा।"

मीश्का तब तक काकेशिया पहुंच चुका था:

काकेशिया मेरे चरणों को चूम रहा है, औ' मैं
उन्नत गिरि शृंग पर गर्वोन्नत खड़ा हुआ हूं...

उसने लगभग सारी ही दुनिया की सैर कर ली, लेकिन सुदूर उत्तर तक आते-आते उसका गला जवाब देने लगा था और मेरी बारी आ गई थी। मुझे कोई कविता याद न आ पाई, इसलिए मैंने एक गाना और शुरू कर दिया:

सारी दुनिया में मैं भटक चुका हूं
पर नहीं मिल पाया मुझको प्यार...

लेनोच्का खिलखिलाकर हंस पड़ी। "इसे बस गाने ही आते हैं!" उसने मिमियाकर कहा।

"मैं क्या करूं—कविताएं तो सारी मीश्का ने ही सुना दीं," मैंने कहा और एक और गाना शुरू कर दिया:

न रहे सर, न सही...

"रहेगा भी नहीं," चाचा फ़ेद्या ने कहा, "अगर तुम लोगों को इसी तरह तंग करते रहे।" उन्होंने आह भरते हुए अपने माथे को मला, सीट के नीचे से सूटकेस खींचा और बाहर चले गये।

* * *

गाड़ी शहर के पास पहुंच रही थी। मुसाफ़िर खड़े हो गये और अपना सामान इकट्ठा करके दरवाज़े की तरफ़ जाने लगे। हमने भी थैला और सूटकेस खींचा और दूसरों के पीछे-पीछे निकलकर प्लेटफ़ार्म पर आ गये। सूटकेस से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी।

"देखा तुमने," मीश्का ने कहा, "जब कोई बात नहीं है, तो पट्ठा चुप है, और जब चुप रहने की बात थी, तो आसमान सर पर उठा रखा था।"

"कहीं उसका दम तो नहीं घुट रहा!" मैंने कहा। "खोलकर क्यों न देख लें?'

मीश्का ने सूटकेस नीचे रखा और उसे खोला। लैंडी भीतर था ही नहीं! उसमें कुछ किताबें थी, कापियां, एक तौलिया, साबुन, सींग के फ्रेम का चश्मा और बुनने की सलाइयां भी थीं, पर कुत्ता नहीं था।

"लैंडी कहां है?" मीश्का ने कहा।

"यह सूटकेस हमारा नहीं है।"

मीश्का ने उसे अच्छी तरह देखा। "बात तो यही है। हमारे में छेद थे और इसके अलावा वह गहरे कत्थई रंग का था और यह हलका कत्थई है। मैं भी कैसा गधा हूं! मैं किसी और का सूटकेस उठा लाया।"

"चलो स्टेशन वापस चलें। हो सकता है कि अपना सूटकेस अभी भी सीट के नीचे ही हो।"

हम लपककर वापस स्टेशन आये। गाड़ी अभी भी खड़ी थी, लेकिन हम यह भूल गये थे कि हम किस डिब्बे में आये थे। इसलिए हम सारी गाड़ी में सीटों के नीचे झांकते फिरे, लेकिन हमारे सूटकेस का कहीं निशान भी न मिला।

"उसे कोई ले गया होगा," मैंने कहा।

"चलो डिब्बों में फिर देखें," मीश्का ने राय दी।

हमने गाड़ी को एक बार फिर छान डाला, लेकिन अपने सूटकेस का हमें कोई पता न चला। हम यही सोच रहे थे कि क्या करें कि तभी कंडक्टर ने आकर हमें भगा दिया।

हम घर गये। मैं अपना थैला लेने के लिए मीश्का के घर गया। मीश्का की मां समझ गई कि कोई-न-कोई बात जरूर है।

"क्या मामला है?" उन्होंने पूछा।

"लैंडी खो गया।"

"लैंडी कौन?"

"देहात से हम जो पिल्ला लाये थे। क्यों, तुम्हें मेरी चिट्ठी नहीं मिली?"

"न, मुझे नहीं मिली।"

"मैंने उसमें उसके बारे में सारी बात लिख दी थी।" और फिर मीश्का ने अपनी मां को सारी कहानी सुनाई—लैंडी कितना शानदार पिल्ला था, हमने उसे सूटकेस में कैसे बंद किया और सूटकेस क्योंकर खो गया। कहानी के ख़त्म होते-होते उसके आंसू निकल आये। मुझे नहीं मालूम कि बाद में क्या हुआ, क्योंकि मैं अपने घर चला आया।

* * *

अगले दिन मीश्का मेरे घर आया और कहने लगा :

"जानते हो क्या? मैं चोर हूं!"

"सो कैसे?"

"क्योंकि मैं किसी और का सामान उठा लाया।"

"लेकिन तुम उसे ग़लती से ही तो लाये।"

"ठीक है, मैं जानता हूं। लेकिन अगला यही समझेगा कि मैं जानकर लाया। फिर, इसका मालिक उसकी तलाश कर रहा होगा। मुझे इसे किसी-न-किसी तरह लौटाना है।"

"तुम उसका पता कैसे लगाओगे?"

"मैं शहर भर में नोटिस चिपका दूंगा। जिसका है, वह उन्हें पढ़कर अपना सूटकेस लेने आ जायेगा।"

"ठीक है," मैंने कहा। "चलो, नोटिस अभी लिख लें।"

हमने कई काग़ज़ काटे और उन पर साफ़-साफ़ अक्षरों में लिखा :

"पाया—रेलगाड़ी में एक सूटकेस मिला है। पाने का पता : मीशा कोज़लोव, ८ पेस्चानाया सड़क, फ़्लैट ३।"

कोई बीस नोटिस लिख चुकने के बाद मैंने कहा :

"अब एक नोटिस हमें लैंडी के बारे में भी लिखना चाहिए। हो सकता है कि उसे भी कोई ग़लती से ही ले गया हो।"

"हां, वह हमारे बराबर बैठा आदमी ही रहा होगा," मीश्का ने कहा।

हमने कुछ काग़ज़ और काटे और एक और नोटिस लिखा :

"खो गया—सूटकेस में बंद एक पिल्ला खो गया है। कृपया मीशा कोज़लोव को लौटा दीजिये या इस पते पर लिखिये—८, पेस्चानाया सड़क, फ़्लैट ३।"

हमने कोई बीस नोटिस इस के भी लिखे और उन्हें चिपकाने के लिए निकल गये। हमने उन्हें बिजली के खंभों और दीवारों पर चिपका दिया। जल्दी ही हमारी सभी पर्चियां खत्म हो गई और हम कुछ और लिखने के लिए घर आ गये। अभी हम लिख ही रहे थे कि दरवाज़े की घंटी बजी। मीश्का ने लपककर दरवाज़ा खोला। एक अनजान स्त्री भीतर आई।

"मीशा कोज़लोव से मिल सकती हूं क्या?" उसने कहा।

"मैं ही मीशा कोज़्लोव हूं," मीश्का ने हैरान होते हुए जवाब दिया। इस औरत को उसका नाम कैसे मालूम हुआ?

"मैंने तुम्हारा नोटिस पढ़ा है," उसने कहा। "गाड़ी से मेरा सूटकेस खो गया था।"

"सूटकेस?" मीश्का ने खुश होकर कहा। "एक मिनट, मैं जाकर ले आता हूं।" वह दौड़कर दूसरे कमरे में गया और सूटकेस लिये चला आया।

"यह रहा।"

औरत ने उसकी तरफ देखकर सिर हिलाया। "नहीं," उसने कहा "यह मेरा नहीं है।"

"आपका नहीं है?" मीश्का ने हैरानी में कहा।

"शायद इसमें लैंडी की कोई ख़बर है," लिफाफे पर घसीटे पते को देखते हुए उसने कहा। लिफाफे पर जमाने भर की मुहरें और ठप्पे लगे हुए थे।

"यह खत तो हमारा है ही नहीं," उसने आखिर कहा। "यह अम्मा का है। पता जिस तरह लिखा है, उससे तो यही लगता है कि इसे किसी पूरे शास्त्री आदमी ने ही लिखा है। पेस्चानाया सड़क में ही दो गलतियां हैं—पेस्चानाया की जगह पेचनाया लिखा है। यहां आते-आते चिट्ठी ने पूरे शहर की सैर कर ली होगी। अम्मा, अम्मा, लो किसी शास्त्री ने तुम्हें चिट्ठी लिखी है।"

"मैं किसी शास्त्री को नहीं जानती।"

"ख़ैर, इसे पढ़ो तो सही।"

मीश्का की मां ने लिफ़ाफ़ा खोला और खत ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने लगीं:

"प्यारी अम्मा, मैं एक नन्हा-सा पिल्ला पालना चाहता हूं। वह बड़ा ही प्यारा है, एक कान को छोड़कर, जिस पर एक काला दाग है, वह कत्थई रंग का है और मैं उसे बहुत प्यार करता हूं।.." "लो," मीश्का की मां बोलीं, "यह तो तुम्हारा ही ख़त है।"

मेरा हंसी के मारे बुरा हाल हो गया। मैंने मीश्का की तरफ़ देखा। उसका चेहरा चुकन्दर की तरह सुर्ख़ हो गया और वह कमरे से बाहर भाग गया।

* * *

मीश्का ने और मैंने लैंडी को पाने की आशा छोड़ दी, लेकिन मीश्का उसे भूल न पाया। वह अक्सर उसकी बात किया करता था।

"पता नहीं वह अब कहां है?" वह कहता। "पता नहीं उसे कैसा मालिक मिला? बस, वह कुत्तों को पीटनेवाला कोई निर्दयी आदमी न हो। कहीं यह तो नहीं हुआ कि लैंडी को किसी ने भी सूटकेस से न निकाला हो और वह भूखा ही मर गया हो? अगर मुझे यह पता चल जाये कि वह ज़िंदा है और सुखी है, तो मैं इस बात की भी परवाह नहीं करूंगा कि वह मुझे वापस नहीं मिलता है।"

जल्दी ही छुट्टियां बीत गईं और स्कूल फिर शुरू हो गया। हमें बहुत ख़ुशी हुई, क्योंकि हमें स्कूल अच्छा लगता था और कुछ भी न करते-करते हम कुछ ऊब गये थे।

स्कूल खुलने के दिन मैं बहुत जल्दी उठ गया और अपने नये कपड़े पहनकर मीश्का को जगाने के लिए उसके घर लपका। वह मुझे ज़ीने पर ही मिल गया। वह भी मुझे जगाने ही आ रहा था।

हमारा ख़याल था कि हमारी अध्यापिका वही होंगी, लेकिन जब हम स्कूल आये, तो हमने देखा कि अध्यापिका नई हैं। हमारी पुरानी अध्यापिका वेरा अलेक्सांद्रोव्ना की बदली किसी और स्कूल में हो गई थी। हमारी नई अध्यापिका का नाम नदेज्दा वीक्तोरोव्ना था।

नदेज्दा वीक्तोरोव्ना ने हमें टाइमटेबल दिया और यह बताया कि हमें किन किताबों की ज़रूरत होगी। उन्होंने रजिस्टर में से नाम पढ़-पढ़कर हम में से हर किसी का परिचय लिया। इसके बाद उन्होंने पूछा कि हमने पिछले साल पुश्किन की कविता 'शिशिर' पढ़ी थी या नहीं। हमने कहा कि पढ़ी थी।

"तुम्हें वह अभी भी याद है?" उन्होंने पूछा।

सारा क्लास ख़ामोश था। मैंने मीश्का को कुहनी मारी और फुसफुसाकर कहा, "तुम्हें तो याद है न?"

"हां।"

"तो अपना हाथ उठा दो।"

मीश्का ने अपना हाथ उठाया।

"शाबाश!" अध्यापिका ने कहा "यहां आओ और कविता सुनाओ।"

मीश्का जाकर उनकी मेज़ के पास खड़ा हो गया और भावों के साथ सुनाने लगा :

आ गया शिशिर, जा रहा फिर निज
हिमगाड़ी पर प्रमुदित किसान—
श्वेत हिम से धरा पटी है, ख़ुश होकर
दौड़ रहा है घोड़ा उसका सीना तान...

मैंने देखा कि अध्यापिका उसकी तरफ़ घूरे जा रही हैं। उनके माथे पर सलवटें पड़ रही थीं, मानो वह कुछ याद करने की कोशिश कर रही हों। उन्होंने उसे अचानक रोक दिया और कहा :

"एक मिनट—मुझे याद आ गया। तुम वही लड़के हो न, जिसने इस बार गरमियों में गाड़ी में कविता-पाठ किया था?"

मीश्का सुर्ख़ हो गया। "हां, मैं ही हूं," उसने कहा।

"हूं! ठीक है, इतना ही काफी होगा। क्लास के बाद तुम अध्यापक कक्ष में आ जाना। मुझे तुमसे बात करनी है।"

"मैं कविता पूरी कर दूं?" मीश्का ने पूछा।

"नहीं। साफ है कि तुम्हें अच्छी तरह याद है।"

मीश्का बैठ गया और सीट के नीचे मेरे पैर को ठोकर लगाई।

"यह वही है! यह उस छोकरी लेनोच्का और उस आदमी के साथ थी, जो हम पर नाराज़ हो रहा था। लोग उसे फेद्या चाचा कह रहे थे। याद आया?"

"हां," मैंने कहा। "तुम्हारे कविता-पाठ शुरू करने के साथ मैं इन्हें पहचान गया था।"

"अब मैं क्या करूं?" मीश्का ने परेशान होते हुए कहा। "उन्होंने मुझे रुकने के लिए क्यों कहा? मेरा ख़याल है कि यह मुझे तब गाड़ी में शरारत करने के लिए झाड़ेंगी।"

हम इतने परेशान थे कि हमें इसका भी ध्यान न हुआ कि घंटे कैसे खत्म हो गये। हम ही सबसे बाद में क्लास से बाहर आये। मीश्का अध्यापक कक्ष में चला गया और मैं बाहर बरामदे में इंतज़ार करने लगा। आख़िर वह बाहर आया।

"तो, क्या कहा उन्होंने?"

"हुआ यह कि हम जो सूटकेस ले आये, वह इनका ही था, बल्कि यों कहना चाहिए कि इनका नहीं, बल्कि उस आदमी का, जिसका मतलब यही है। है वह बेशक इन्हीं का, क्योंकि इन्होंने सही-सही बता दिया है कि उसके भीतर क्या-क्या है और वह बिलकुल ठीक है। उन्होंने मुझ से उसे आज शाम को अपने यहां लाने के लिए कहा है। यह रहा पता।"

उसने मुझे पता लिखी एक चिट दिखाई। हम जल्दी-जल्दी घर गये, सूटकेस उठाया और चल पड़े।

हमने मकान किसी खास परेशानी के बिना ढूंढ लिया और घंटी बजाई। दरवाज़ा उसी लड़की लेनोच्का ने खोला, जिसे हमने गाड़ी में देखा था।

उसने हमसे पूछा कि हम क्या चाहते हैं, लेकिन हम अपनी नई अध्यापिका का नाम भूल गये थे और यह नहीं सोच पा रहे थे कि किससे पूछें।

"एक मिनट," मीश्का ने कहा। "नाम पते के साथ लिखा होना चाहिए। यह रहा वह – नदेज्दा विक्तोरोव्ना।"

"अच्छा!" लड़की ने कहा। "तुम हमारा सूटकेस लाये हो, है न! भीतर आ जाओ।"

हमें एक कमरे में पहुंचाकर उसने आवाज़ दी :

"नाद्या चाची, फ़ेद्या चाचा, लड़के तुम्हारा सूटकेस लेकर आये हैं।"

नदेज्दा विक्तोरोव्ना और फ़ेद्या चाचा आये। फ़ेद्या चाचा ने सूटकेस खोला, अपना चश्मा निकाला और उसे तुरंत अपनी नाक पर चढ़ा लिया।

"मिल गया आख़िर मेरा मनपसंद चश्मा!" उन्होंने ख़ुश होकर कहा। "मैं बड़ा ख़ुश हूं कि यह तुम्हें ही मिला। इस नये चश्मे का मैं ज़रा भी आदी नहीं हो पाया हूं।"

"जैसे ही हमें पता चला कि हम भूल से ग़लत सूटकेस ले आये हैं, हमने शहर भर में नोटिस चिपका दिये थे," मीश्का ने बताया।

"भई मैं कभी नोटिस नहीं पढ़ता," फ़ेद्या चाचा बोले। "इससे सबक़ मिल गया। अब कभी मुझसे कुछ खोया, तो मैं एक-एक नोटिस पढ़ूंगा।"

तभी लेनोच्का के पीछे-पीछे एक छोटा-सा कुत्ता कमरे में दौड़ता आया। एक कान को छोड़कर, जो काला था, वह एकदम कत्थई रंग का था।

"देखा!" मीश्का ने फ़ुसफ़ुसाकर कहा।

पिल्ले ने अपने कान उठा लिये और अपना सिर एक तरफ़ झुकाकर हमारी तरफ़ देखा।

"लैडी!" हम चिल्लाये।

लैडी ने ख़ुशी की एक किलकारी मारी और हमारी तरफ़ लपका। हम पर कूद-कूद कर वह ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। मीश्का ने उसे उठा लिया और चिपटा लिया।

"लैडी! प्यारे लैडी! तो तू हमें भूला नहीं!"

लैडी उसका चेहरा चाटने लगा और मीश्का ने उसे ऐन नाक पर चूम लिया। लेनोच्का हंसने और तालियां बजाने लगी।

"यह उसी सूटकेस में था, जो हम गाडी में ले आये थे। हमने भूल से तुम्हारा ही उठा लिया होगा। सारी गलती फ़ेद्या चाचा की ही है।"

"हां, गलती मेरी ही है," फ़ेद्या चाचा ने कहा। "मैंने तुम्हारा सूटकेस ले लिया और पहले निकल आया, और तुमने मेरे सूटकेस को अपना समझकर ले लिया।"

उन्होंने हमें हमारा सूटकेस दे दिया – वही, जिसमें लैंडी आया था। मैंने देख लिया कि लेनोच्का लैंडी से अलग होना नहीं चाहती। लगता था कि वह रोने ही वाली है। लेकिन मीश्का ने उससे वायदा किया कि अगले साल जब दिम्राना पिल्ले देगी, तो हम सबसे सुंदर पिल्ला छांटकर उसके लिए ले आयेंगे।

"सच? भूलोगे तो नहीं?" उसने खुशामद करते हुए कहा।

हमने कहा कि हम नहीं भूलेंगे। इसके बाद हमने सबको नमस्कार किया और वहां से चल पड़े। मीश्का लैंडी को गोद में लिये चल रहा था, जो अपना सिर कभी इधर करता, कभी उधर, मानो देखी हर चीज़ में दिलचस्पी ले रहा हो। ज़ाहिर था कि लेनोच्का ने उसे इस डर से घर में ही बंद कर रखा था कि कहीं वह भाग न जाये।

जब हम घर पहुंचे, तो हमने देखा कि कितने ही लोग हमारा इंतज़ार कर रहे हैं।

"तुम्हीं लोगों ने सूटकेस पाया है न?" उन्होंने पूछा।

"हां," हमने कहा। "लेकिन अब कोई सूटकेस नहीं है। हमने उसे उसके मालिक को लौटा दिया है।"

"तो तुमने नोटिस क्यों नहीं उतारे? लोगों का बेकार वक्त खराब करवा रहे हो।"

वे कुछ और बड़बड़ाये और फिर चले गये। उसी दिन मैं और मीश्का घूमने के लिए गये और हमने सारे नोटिस फाड़ दिये।

"एक मिनट," मीश्का ने कहा। "नाम पते के साथ लिखा होना चाहिए। यह रहा वह – नदेज्दा विक्तोरोव्ना।"

"अच्छा!" लड़की ने कहा। "तुम हमारा सूटकेस लाये हो, है न! भीतर आ जाओ।"

हमें एक कमरे में पहुंचाकर उसने आवाज़ दी :

"नाद्या चाची, फ़ेद्या चाचा, लड़के तुम्हारा सूटकेस लेकर आये हैं।"

नदेज्दा विक्तोरोव्ना और फ़ेद्या चाचा आये। फ़ेद्या चाचा ने सूटकेस खोला, अपना चश्मा निकाला और उसे तुरंत अपनी नाक पर चढ़ा लिया।

"मिल गया आख़िर मेरा मनपसंद चश्मा!" उन्होंने ख़ुश होकर कहा। "मैं बड़ा ख़ुश हूं कि यह तुम्हें ही मिला। इस नये चश्मे का मैं ज़रा भी आदी नहीं हो पाया हूं।"

"जैसे ही हमें पता चला कि हम भूल से ग़लत सूटकेस ले आये हैं, हमने शहर भर में नोटिस चिपका दिये थे," मीश्का ने बताया।

"भई मैं कभी नोटिस नहीं पढ़ता," फ़ेद्या चाचा बोले। "इससे सबक़ मिल गया। अब कभी मुझसे कुछ खोया, तो मैं एक-एक नोटिस पढ़ूंगा।"

तभी लेनोच्का के पीछे-पीछे एक छोटा-सा कुत्ता कमरे में दौड़ता आया। एक कान को छोड़कर, जो काला था, वह एकदम कत्थई रंग का था।

"देखा!" मीश्का ने फुसफुसाकर कहा।

पिल्ले ने अपने कान उठा लिये और अपना सिर एक तरफ़ झुकाकर हमारी तरफ़ देखा।

"लैडी!" हम चिल्लाये।

लैडी ने ख़ुशी की एक किलकारी मारी और हमारी तरफ़ लपका। हम पर कूद-कूद कर वह ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। मीश्का ने उसे उठा लिया और चिपटा लिया।

"लैडी! प्यारे लैडी! तो तू हमें भूला नहीं!"

लैडी उसका चेहरा चाटने लगा और मीश्का ने उसे ऐन नाक पर चूम लिया। लेनोच्का हंसने और तालियां बजाने लगी।

"यह उसी सूटकेस में था, जो हम गाडी से ले ग्राये थे। हमने भूल से तुम्हारा ही उठा लिया होगा। सारी गलती फेद्या चाचा की ही है।"

"हा, गलती मेरी ही है," फेद्या चाचा ने कहा। "मैने तुम्हारा सूटकेस ले लिया ग्रौर पहले निकल ग्राया, ग्रौर तुमने मेरे सूटकेस को ग्रपना समझकर ले लिया।"

उन्होंने हमें हमारा सूटकेस दे दिया – वही, जिसमे लैडी ग्राया था। मैने देख लिया कि लेनोच्का लैडी से ग्रलग होना नही चाहती। लगता था कि वह रोने ही वाली है। लेकिन मीश्का ने उससे वायदा किया कि ग्रगले साल जब दिग्राना पिल्ले देगी, तो हम सबमे सुदर पिल्ला छाटकर उसके लिए ले ग्रायेगे।

"सच? भूलोगे तो नही?" उसने खुशामद करते हुए कहा।

हमने कहा कि हम नही भूलेंगे। इसके बाद हमने सबको नमस्कार किया ग्रौर वहा से चल पड़े। मीश्का लैडी को गोद मे लिये चल रहा था, जो ग्रपना सिर कभी इधर करता, कभी उधर, मानो देखी हर चीज़ मे दिलचस्पी ले रहा हो। ज़ाहिर था कि लेनोच्का ने उसे इस डर से घर मे ही बद कर रखा था कि कही वह भाग न जाये।

जब हम घर पहुंचे, तो हमने देखा कि कितने ही लोग हमारा इतज़ार कर रहे हैं।

"तुम्ही लोगों ने सूटकेस पाया है न?" उन्होने पूछा।

"हा," हमने कहा। "लेकिन ग्रब कोई सूटकेस नही है। हमने उसे उसके मालिक को लौटा दिया है।"

"तो तुमने नोटिस क्यो नही उतारे? लोगो का बेकार वक्त खराब करवा रहे हो।"

वे कुछ ग्रौर बड़बड़ाये ग्रौर फिर चले गये। उसी दिन मैं ग्रौर मीश्का घूमने के लिए गये ग्रौर हमने सारे नोटिस फाड दिये।

3–1382

टेलीफ़ोन

मीश्का को और मुझे खिलौनों की दूकान में एक दिन एक बड़ा बढ़िया नया खिलौना नज़र आया। यह टेलीफ़ोन का एक सेट था, जो बिलकुल असली की तरह ही काम करता था। लकड़ी के एक बड़े बक्से में दो टेलीफ़ोन और तार का एक लच्छा बड़ी अच्छी तरह रखे हुए थे। सामान बेचनेवाली लड़की ने हमें बताया कि एक ही मकान के अलग-अलग फ़्लैटों में इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। एक टेलीफ़ोन एक फ़्लैट में रख लो और दूसरा दूसरे में और उन्हें तार से जोड़ दो, बस!

मीश्का और मैं – दोनों – एक ही मकान में रहते हैं, मेरा फ़्लैट उसके फ़्लैट से एक मंज़िल ऊपर है। हमने सोचा कि यह बात तो बड़ी मज़ेदार रहेगी कि जब चाहा, एक-दूसरे को टेलीफ़ोन कर लिया।

"इसके अलावा," मीश्का ने कहा, "बात यह भी है कि यह कोई ऐसा मामूली खिलौना नहीं है कि जो टूट गया और फेंक दिया। यह बड़े काम का खिलौना है।"

"हां, यह तो है," मैंने कहा। "इससे ज़ीने में चढ़े-उतरे बिना अपने पड़ोसी से बात की जा सकती है।"

"सचमुच," मीश्का ने बड़ी बेचैनी के साथ कहा, "बड़े काम की चीज है। घर बैठे मन चाहे जितनी बातें कर लो।"

हमने टेलीफोन खरीदने के लिए पैसा बचाने की ठान ली। दो हफ्ते तक हमने न आइसक्रीम खाई, न फ़िल्में ही देखीं और दो हफ्ते बीतते-बीतते हमारे पास टेलीफोन खरीदने लायक़ पैसे इकट्ठा हो गये।

हम दूकान से बक्सा लिये दौड़े-दौड़े घर आये। हमने एक टेलीफोन मेरे फ़्लैट में लगा लिया और दूसरा मीश्का के फ़्लैट में और उसका तार मेरी खिड़की से मीश्का के कमरे में निकाल दिया।

"चलो," मीश्का ने कहा, "इसकी आज़माइश भी कर लें। तुम ऊपर लपको और मेरे फोन का इंतज़ार करो।"

मैं लपककर घर गया और रिसीवर उठाया। मीश्का के चिल्लाने की आवाज़ आने भी लगी थी।

"हल्लो! हल्लो!"

मैंने पूरे ज़ोरों से चिल्लाकर कहा, "हल्लो!"

"मेरी आवाज आ रही है?" मीश्का ने चिल्लाकर पूछा।

"हां, तुम्हारी आवाज आ रही है। तुम मेरी आवाज सुन रहे हो?"

"हां, सुनाई दे रही है। है न मज़ेदार बात! मेरी आवाज अच्छी तरह सुन रहे हो न?"

"बहुत अच्छी तरह। और तुम?"

"मैं भी। भई वाह, हा! हा! मेरी हंसी सुन रहे हो?"

"हा-हा। हा! हा! हा! सुन रहे हो?"

"हां। अच्छा सुनो, मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं।"

वह दौड़ता हुआ मेरे कमरे में आया। हम ख़ुशी के मारे एक-दूसरे से चिपट गये।

"ख़ुश हो न कि हमारे पास टेलीफोन है? है न बढ़िया बात?"

"है तो," मैंने कहा।

"अच्छा, अब मैं जाता हूं और जाकर तुम्हें फिर फोन करता हूं।"

वह वापस भाग गया। फोन फिर बजा। मैंने रिसीवर उठाया।

"हल्लो!"

"मेरी आवाज़ सुन रहे हो?
"ख़ूब अच्छी तरह।"
"सच?"
"हां-हां, सुन रहा हूं।"
"मैं भी। अच्छा, चलो अब बात करें।"
"हां, बात करनी चाहिए। किस बारे में बात करें?"
"अरे, किसी भी बात के बारे में। तुम ख़ुश हो न कि हमने टेलीफ़ोन ख़रीद लिया?"
"बहुत।"
"इसे न ख़रीदते, तो बहुत बुरा होता। है न?"
"बहुत।"
"तो?"
"तो क्या?"
"तुम कुछ क्यों नहीं कहते?"
"तुम ही कुछ कहो।"
"समझ में नहीं आता कि क्या कहूं," मीश्का ने कहा। "हमेशा यही बात होती है। जब बात करने की ज़रूरत होती है, तो समझ में नहीं आता कि क्या बात करें। लेकिन जब यह पता होता है कि बात नहीं करनी है, तो चुप रहा नहीं जाता।"
मैंने कहा, "सुनो। मैं फ़ोन बंद करके कुछ देर सोचता हूं। कहने लायक़ कोई बात दिमाग़ में आई, तो मैं तुम्हें फ़ोन कर दूंगा।"
"ठीक है।"
मैंने रिसीवर रख दिया और सोचने लगा। अचानक फ़ोन बजा। मैंने रिसीवर उठाया।
"तुमने कुछ सोचा?" मीश्का ने पूछा।
"अभी नहीं। और तुमने?"
"नहीं, मैंने कुछ नहीं सोचा है।"
"फिर तुमने फ़ोन किसलिए किया?"
"मैंने सोचा कि शायद तुमने कुछ सोच लिया हो।"
"मैंने सोच लिया होता, तो तुम्हें फ़ोन कर देता।"

मैंने सोचा कि तुम शायद इसको सोचो भी नहीं।"

"मुझे क्या गधा समझते हो?"

"क्या मैंने यह कहा कि तुम गधे हो?"

"फिर तुमने क्या कहा था?"

"कुछ नहीं। मैंने कहा कि तुम गधे नहीं हो।"

"ठीक है यार, बस भी करो। गधों के बारे में काफी हुआ। अब बेकार बातें करने के बजाय अपनी पढ़ाई करनी चाहिए।

"हां, ऐसा ही करना चाहिए।"

"मैंने फ़ोन बंद किया और पढाई करने बैठ गया। अभी मैंने किताब खोली ही थी कि फोन बज उठा।

"सुनो, मैं फोन पर गाऊंगा और पियानो बजाऊंगा।"

"ठीक है।"

मुझे घर्राने-जैसी आवाज सुनाई दी, फिर पियानो के पर्दो के दबाये जाने की और फिर अचानक एक ऐसी आवाज़ ने, जो किसी भी तरह मीश्का की नहीं थी, गाना शुरू किया.

बचपन के दिन भी क्या दिन थे

भई वाह–क्या बात है! मुझे अचरज होने लगा। भला मीश्का ने ऐसे गाना कहां सीख लिया?

तभी मीश्का आ गया। हसी के मारे उसकी बत्तीसी निकल रही थी।

"यही समझे थे न कि मैं गा रहा हूं? यह ग्रामोफोन की आवाज़ है। ज़रा मैं भी तो सुनू।"

मैंने रिसीवर उसे दे दिया। वह कुछ देर तक सुनता रहा, फिर उसने अचानक बड़ी जल्दी में रिसीवर को पटका और नीचे भागा। मैंने रिसीवर अपने कान से लगाया। बड़ी तेज सन-सन और घर्र-घर्र की आवाज सुनाई दी। रिकार्ड पूरा चल गया होगा।

मैं अपनी पढ़ाई करने बैठ गया। फोन बज उठा। मैंने रिसीवर उठाया।

"भौं! भौं!" मेरे कान मे आवाज़ आई।

"भौंक क्यों रहे हो?"

"मैं नहीं भौंक रहा हूं। यह अपना लैंडी है। उसके रिसीवर पर मुंह मारने की आवाज़ आ रही है?"

"हां।"

"मैं रिसीवर उसकी थुथनी से भिड़ाये जा रहा हूं और वह उस पर दांत चला रहा है।"

"वह तुम्हारे फ़ोन को चबा डालेगा।"

"अरे नहीं, ऐसी कोई बात नहीं होगी। यह लोहे का बना है। उफ़! मुझे काट लिया इसने अभी। दुत, बदमाश कुत्ते, उतर नीचे! कैसे काटा मुझे! ले! (भौं! भौं!) नालायक़ कहीं के! इसने मुझे काट लिया था, तुम्हें सुनाई दिया?"

"हां," मैंने कहा।

मैं फिर पढ़ने बैठ गया। लेकिन अगले ही मिनट फ़ोन फिर बज उठा। इस बार रिसीवर में बड़ी तेज सन-सन सुनाई दी।

"यह क्या है?"

"मक्खी।"

"कहां?"

"मैंने इसे रिसीवर के सामने पकड़ रखा है और यह अपने पंख चला रही है।"

मीश्का और मैं दिन भर एक-दूसरे को फ़ोन करते रहे। हमने तरह-तरह की बातें निकालीं—हमने गाने गाये, चिल्लाये, गरजे, बिल्ली की बोली बोले, फुसफुसाये—हर ही बात सुनी जा सकती थी। अपनी पढ़ाई ख़त्म करते-करते काफ़ी देर हो गई। सोने के पहले मैंने मीश्का को फ़ोन करने की सोची।

मैंने फ़ोन किया, लेकिन कोई जवाब न मिला।

मुझे हैरत हुई कि क्या बात है। क्या उसके टेलीफ़ोन ने काम करना बंद भी कर दिया है?

मैंने फिर फ़ोन किया, लेकिन कोई जवाब न आया। मैं नीचे लपका, और मानें या न मानें, देखा कि मीश्का अपने टेलीफ़ोन के टुकड़े-टुकड़े अलग कर रहा है! उसने बैटरी निकाल ली थी, घंटी अलग कर दी थी और अब रिसीवर को खोलनेवाला था।

"ऐ!" मैंने कहा। "टेलीफ़ोन को क्यों तोड़ रहे हो?"

"मैं नहीं तोड़ रहा हूं। मैं तो बस यह देखने के लिए इसे खोल रहा हूं कि यह कैसे बना है। मैं इसे फिर जोड़ दूंगा।"

तुमसे नहीं जोड़ा जायेगा। तुम्हें जोड़ना आता नहीं।"

"कौन कहता है कि मैं नहीं जानता? यह तो एकदम आसान है।"

उसने रिसीवर के पेंच खोले, धातु के कुछ टुकड़े निकाले और भीतर की एक गोल प्लेट को खोलने लगा। प्लेट उखड़कर उछल पड़ी और थोड़ा सा काला पाउडर बिखर गया। मीश्का घबरा गया और पाउडर को रिसीवर में फिर डालने की कोशिश करने लगा।

"तुम माने नहीं और उसे तोड़ ही दिया न?" मैंने कहा।

"यह कोई बात नहीं। मैं इसे चुटकी बजाते-बजाते जोड़ सकता हूं!"

मीश्का उस पर लगा ही रहा, पर काम इतना आसान न था, जितना उसने सोचा था, क्योंकि पेंच बेहद छोटे थे और उन्हें ठीक जगह लगाना बड़ा मुश्किल था। आखिर धातु के एक ज़रा से टुकड़े और दो पेंचों के सिवा बाकी सभी चीज़ों को उसने फिर जोड़ दिया।

"यह क्या है?" मैंने उससे पूछा।

"मारे गये! इन्हें लगाना तो मैं भूल ही गया," मीश्का बोला। "कितनी बेवकूफ़ी की बात है! इन्हें भीतर ही कसा जाना चाहिए था। अब मुझे सारे के सारे को फिर खोलना पड़ेगा।"

"ठीक है," मैंने कहा। "मैं घर जा रहा हूं। यह ख़त्म हो जाये, तो मुझे फोन कर लेना।"

मैं घर चला गया और इंतज़ार करने लगा। इंतज़ार करते-करते मैं थक गया, पर फ़ोन नहीं आया। आख़िर मैं सो गया।

सुबह टेलीफोन इतने ज़ोरों से बजा कि एक बार तो मुझे यही लगा कि जैसे घर में आग लग गई है। मैं बिस्तर में उछला, रिसीवर झपटा और चिल्लाया:

"हल्लो!"

"तुम इस तरह से घुरघुरा क्यों रहे हो?"

"मैं तो नहीं घुरघुरा रहा।"

"घुरघुराना बंद करो और ढंग से बात करो," मीश्का ने चिल्लाकर कहा। आवाज़ से ही वह बेहद नाराज़ लगता था।

"लेकिन मैं ढंग से ही तो बात कर रहा हूं। मुझे घुरघुराने की क्या पड़ी है?"

"जोकर मत वनो। कम-से-कम यह तो मैं मान ही नहीं सकता कि तुम्हारे पास कोई सूअर भी है।"

"लेकिन यहां कोई सूअर नहीं है, मैं कह जो रहा हूं," मैंने भी तैश में आते हुए ज़ोर से कहा।

मीश्का ने कुछ नहीं कहा।

मिनट भर में ही वह मेरे कमरे में आ धमका।

"फ़ोन पर सूअर की वोली वोलने की क्या तुक है?"

"मैंने ऐसी कोई वात नहीं की।"

"मुझे तुम्हारी आवाज़ विलकुल साफ़ सुनाई दी थी।"

"मैं भला सूअरों की वोली क्यों वोलने लगा?"

"मुझे क्या मालूम? मुझे तो यही मालूम है कि कोई मेरे कानों में घुरघुरा रहा था। जाओ, नीचे जाकर ख़ुद देख लो।"

मैं नीचे उसके कमरे में गया, उसे फ़ोन किया और चिल्लाया:

"हल्लो!"

"घुर्र-घुर्र-घुर्र-घुर्र!" वदले में यही सुनाई दिया। मेरी समझ में आ गया कि क्या वात है और मैं मीश्का को वताने के लिए लपका।

"यह सव तुम्हारी ही करनी है," मैंने कहा। "तुमने हाथ लगाकर टेलीफ़ोन का सत्यानास कर डाला है।"

"सो कैसे?"

"तुमने जव रिसीवर को खोला था, तभी उसमें कुछ गड़वड़ कर दी थी।"

"मैंने उसे ग़लत जोड़ा होगा," मीश्का ने मंजूर किया। "मुझे उसकी मरम्मत करनी होगी।"

"तुम मरम्मत कैसे करोगे?"

"मैं तुम्हारे टेलीफ़ोन को खोलकर देखूंगा कि वह कैसे वना है।"

"जी नहीं, आप उसे हाथ भी नहीं लगायेंगे! मैं तुम्हें अपने टेलीफ़ोन का कवाड़ा नहीं करने दूंगा।"

"घवराओ मत। मैं वहुत ध्यान से खोलूंगा। अगर मैंने टेलीफ़ोन सुधारा नहीं, तो हम उसे विलकुल भी इस्तेमाल न कर सकेंगे।"

मुझे उसकी वात माननी पड़ी और उसने तुरंत अपना काम शुरू कर दिया। वह

घटों उसी मे उलझा रहा ग्रौर जब उसने टेलीफोन की "मरम्मत" पूरी की, तो उसने काम करना पूरी तरह से बंद कर दिया। अब तो उसका घुरघुराना भी रुक गया था।

"अब हम क्या करेंगे?" मैंने कहा।

"मैं बताऊ?" मीश्का ने कहा। "चलो, दूकान चलकर उनसे इसकी मरम्मत करने के लिए कहते है।"

हम दूकान पर गये, मगर दूकानवालो ने कहा कि वे टेलीफोनों की मरम्मत नही करते ग्रौर न ही वे यह बता सके कि हम कहा मरम्मत करवा सकते है। सारे दिन हमे बहुत बुरा लगा। तभी मीश्का को एक बात सुझी।

"हम तो गधे हैं! हम एक-दूसरे को तार दे सकते हैं।"

"कैसे?"

"अरे डैश-डॉट से। घटी तो ग्रभी भी बजती ही है। हम इसको काम मे ला सकते है। छोटी घटी का मतलब है डॉट ग्रौर लबी का डैश। हम मोर्स-प्रणाली सीखकर एक-दूसरे को सदेश भेज सकते है।"

हमने मोर्स-प्रणाली को सीखना शुरू किया—'ए' के लिए एक डॉट ग्रौर एक डैश, 'बी' के लिए एक डैश ग्रौर तीन डॉट, 'सी' के लिए एक डॉट ग्रौर तीन डैश, ग्रादि-ग्रादि। जल्दी ही हमने पूरी की पूरी वर्णमाला सीख ली ग्रौर सदेश भेजने लगे। शुरू-शुरू मे रफ़्तार बहुत धीमी थी, लेकिन कुछ समय बाद हम ग्रपनी घटी ग्रसली तार-बाबुग्रो की ही तरह टिपटिपाने लगे। यह टेलीफ़ोन से भी ज्यादा मज़ेदार था। लेकिन यह सिलसिला ज्यादा दिन न चला। एक दिन मैंने सुबह मीश्का को सदेश भेजा, पर जवाब न मिला। मैंने सोचा कि वह सो रहा है। इसलिए मैंने कुछ देर बाद फिर संदेश भेजा, लेकिन ग्रब भी जवाब न मिला। मैंने नीचे जाकर उसका दरवाज़ा खटखटाया। मीश्का ने दरवाज़ा खोला।

"ग्रागे से खटखटाने की जरूरत नहीं। तुम घटी बजा सकते हो।"

उसने दरवाज़े पर लगे एक बटन की तरफ इशारा किया।

"यह क्या है?"

"घंटी।"

"हा, हा, हांको!"

"हां, यह बिजली की घंटी है। ग्रब से तुम दरवाज़ा खटखटाने के बजाय यह घटी बजा सकते हो।"

"कहां से लाये इसे तुम?"

"मैंने इसे आप बनाया है।"

"कैसे?"

"मैंने इसे टेलीफ़ोन से बनाया है।"

"क्या?"

"हां। मैंने टेलीफ़ोन की घंटी निकाल ली। बटन भी। मैंने उसकी बैटरी भी निकाल ली। खिलौने को रखने की क्या तुक, जब उससे कोई काम की चीज़ बनाई जा सकती है!"

"लेकिन तुम्हें टेलीफ़ोन तोड़ने का कोई अधिकार न था," मैंने कहा।

"क्यों नहीं था? मैंने अपना ही तो तोड़ा है, तुम्हारा तो नहीं।"

"ठीक है, लेकिन टेलीफ़ोन हम दोनों का है। अगर मुझे मालूम होता कि तुम उसके टुकड़े-टुकड़े कर दोगे, तो मैं तुमसे साझा करके उसे नहीं लाता। मुझे ऐसा टेलीफ़ोन नहीं चाहिए, जो काम ही न करे।"

"तुम्हें टेलीफ़ोन की ज़रूरत ही नहीं है। हम एक-दूसरे से कोई इतनी दूर नहीं रहते। अगर तुम मुझसे बात करना चाहो, तो तुम नीचे आ सकते हो।"

"मैं तुमसे अब कभी बात करना चाहता ही नहीं," मैंने कहा और चला आया।

मैं उससे इतना नाराज़ था कि पूरे तीन दिन मैंने उससे बात नहीं की। अकेले मुझे बहुत अकेलापन लग रहा था, इसलिए मैंने अपने टेलीफ़ोन को खोला और उससे भी दरवाज़े की घंटी बना ली। लेकिन मैंने मीश्का की तरह नहीं किया। मैंने अपनी घंटी ढंग से बनाई। मैंने बैटरी को दरवाज़े के पास एक अलमारी में रखा और उससे दीवार के साथ-साथ एक तार घंटी और बटन तक ले गया। मैंने बटन को अच्छी तरह कस दिया, जिससे वह मीश्का के बटन की तरह कील पर न लटका रहे। मां और पिता जी ने भी इतनी सफ़ाई से किये काम के लिए मुझे शाबाशी दी।

मैं मीश्का को घंटी के बारे में बताने के लिए नीचे गया।

मैंने उसके दरवाज़े पर लगे बटन को दबाया, लेकिन किसी ने जवाब न दिया। मैंने उसे कई बार दबाया, पर उसके बजने की आवाज़ न सुनाई दी। इसलिए मैंने दरवाज़ा खटखटाया। मीश्का ने दरवाज़ा खोला।

"तुम्हारी घंटी को क्या हुआ? बजती नहीं?"

"नहीं, वह ख़राब है।"

"क्यों, क्या खराबी है?"

"मैंने बैटरी को खोल दिया।"

"क्या किया!"

"हां, मैं देखना चाहता था कि वह किस चीज़ से बनी है।"

"टेलीफोन और घंटी के बिना तुम क्या करोगे?" मैंने उससे पूछा।

"कोई बात नहीं, मैं किसी तरह काम चला लूंगा," उसने ठंडी सांस लेते हुए जवाब दिया।

मैं काफी परेशानी के साथ घर लौट आया। मीश्का ऐसी बातें क्यों करता है? वह हर चीज़ को क्यों तोड़ देता है? मैं उसके लिए बहुत दुखी था।

उस रात मैं हमारे टेलीफोन और उससे बनाई घंटी के बारे में सोचता-सोचता काफी देर तक सो नहीं सका। फिर मैं बिजली के बारे में और इस बारे में सोचने लगा कि बैटरियों में बिजली कहां से आती है। हर कोई गहरी नींद में सो रहा था, लेकिन मैं इन सब बातों को सोचता जाग रहा था। कुछ देर के बाद मैं उठा, बिजली जलाई, अलमारी से अपनी बैटरी निकाली और उसे तोड़कर खोल लिया। उसमें कोई पानी जैसी चीज़ थी, जिसमें कपड़े में लिपटी एक छोटी सी काली छड़ पड़ी हुई थी। तो यह बात थी! बिजली इस पानी जैसी चीज़ से आ रही थी। मैंने बैटरी को होशियारी के साथ वापस अलमारी में रख दिया और जाकर बिस्तर पर लेट गया। मुझे तुरत नींद आ गई।

खट-खटा-खट!

मीश्का, कोस्त्या और मैं इस बार गरमियों में हमारे पायनियर दल के कूच के एक दिन पहले देहात चले आये थे। हमें औरों के पहले इसलिए भेजा गया था कि उनके पहुंचने के पहले जगह को ठीक-ठाक कर लें। हमने अपने पायनियर दल के नायक वीत्या से हमें जाने देने के लिए बार-बार कहा था, क्योंकि हम जितनी जल्दी हो सके, देहात पहुंचना चाहते थे।

वीत्या भी हमारे साथ ही आया। हम जब वहां पहुंचे, तो अभी सफ़ाई पूरी ही हुई थी। हम तुरंत दीवारों पर तसवीरें टांगने और रंगीन पोस्टर लगाने में लग गये। हमने रंगीन काग़ज़ की झंडियां बनाईं और उनके वंदनवार बनाकर छत के नीचे टांग दिये। फिर हमने जंगली फूल चुने और उनके बड़े-बड़े गुलदस्ते बनाकर खिड़कियों में रख दिये। सजावट पूरी होने पर जगह सचमुच बहुत सुंदर लगने लगी।

वीत्या शाम को शहर लौट गया। हमारे घर की रखवालिन मार्या मक्सीमोव्ना, जो पास ही एक कुटिया में रहती थीं आईं और उन्होंने कहा कि हम रात को उनके

यहा ठहर सकते हैं। उनका ख़याल था कि खाली घर में अकेले सोते हमें डर लगेगा। लेकिन मीश्का ने उनसे कह दिया कि हम किसी चीज़ से नहीं डरते।

जब मार्या मक्सीमोव्ना चली गईं, तो हमने समोवार सुलगाया और दरवाज़े पर बैठकर उसके उबलने का इंतज़ार करने लगे।

देहात कितना सुंदर लग रहा था! हमारे मकान से सटे रुयबीना* के ऊंचे-ऊंचे पेड़ थे और उनके आगे, बाड़े के साथ-साथ लाइम के ऊंचे-ऊंचे और बड़े पुराने पेड़। लाइम के पेड़ों की शाखाओं में कौओं के घोंसलों की भरमार थी और कौए लगातार कांव-कांव करते रहते थे। हवा गुबरैलों की भनभनाहट से गूज रही थी। वे सभी दिशाओं में सन्नाते चले जाते थे। कुछ खटाक से दीवार से जा टकराते और ज़मीन पर गिर जाते। मीश्का मुग्ध हुए गुबरैलों को उठा-उठाकर एक डिब्बे में रखता जाता था।

सूरज जगल के पीछे जा डूबा और बादलों में लाली दमकने लगी, मानो उनमें आग लग गई हो। इतना सुदर लग रहा था कि अगर मेरे पास मेरे रंग होते, तो मैं वहा के वहीं एक चित्र बना डालता, जिसमें ऊपर गुलाबी बादल होते और नीचे हमारा समोवार और समोवार की चिमनी से धुआ बल खाता निकलता होता, जैसे जहाज़ की चिमनी से धुआ निकलता है।

कुछ देर के बाद आसमान से सुर्खी जाती रही और बादल भूरे पहाड़ों जैसे दिखने लगे। हर चीज इतनी बदली-बदली नजर आती थी कि लगता था मानो जादू से हम किसी जादुई देश में ही आ गये हों।

जब समोवार में पानी उबलने लगा, तो हम उसे भीतर ले गये, लैंप जलाया और चाय पीने बैठ गये। खुली हुई खिड़कियों से पतंगे भीतर आ रहे थे और लैंप के चारों तरफ़ नाचते चले जा रहे थे। ख़ामोश, खाली मकान में अकेले बैठे-बैठे चाय पीते-पीते मेज़ पर रखे समोवार की हलकी सन-सन को सुनना कुछ अजीब और रोमांचक लग रहा था।

चाय पीने के बाद हमने सोने की तैयारी की। मीश्का ने दरवाज़ा बद करके साकल को डोरी से बाध दिया।

"यह किसलिए?" हमने पूछा।

"जिससे डाकू भीतर न आ पायें।"

---

*बेर जैसे लाल फलवाला एक ऊंचा पेड़।—अनु०

हमने उसकी ख़ूब हंसी उड़ाई। "डरो मत, यहां आस-पास कोई डाकू-वाकू नहीं है," हमने उससे कहा।

"मैं डरता नहीं," उसने कहा। "लेकिन कौन जानता है कि कव क्या हो जाये! हमें खिड़कियां भी वंद कर लेनी चाहिए।"

हम उस पर हंसें, लेकिन एहतियात के लिए हमने खिड़कियां वंद कर लीं। हमने अपने पलंग भी सटा लिये, जिससे चिल्लाये विना वात कर सकें।

मीश्का ने कहा कि वह दीवार के पास सोयेगा।

"तुम चाहते हो कि डाकू पहले हमें ही मारें, है न?" कोस्त्या ने कहा। "ठीक है, हम नहीं डरते।"

लेकिन इससे भी उसे संतोष न हुआ। सोने के पहले वह रसोईघर से एक छुरा ले आया और उसे अपने तकिये के नीचे रख लिया। कोस्त्या और मैं इतना हंसे कि वस पेट फटने की ही कसर रह गई।

"देखना, कहीं ग़लती से हमारे ही सिर न उड़ा देना!" हमने उससे कहा। "अंधेरे में तुम हमें ही डाकू समझ सकते हो।"

"घवराओ मत," मीश्का ने कहा। "मैं कोई ग़लती नहीं करूंगा।"

हमने लैंप वुझाया, अपने-अपने कंवल में लिपट गये और अंधेरे में एक-दूसरे को कहानियां सुनाने लगे। पहले मीश्का ने, फिर मैंने और जव कोस्त्या की वारी आई, तो उसने इतनी लंवी और डरावनी कहानी सुनाई कि मीश्का ने डर के मारे अपना सिर कंवल में छिपा लिया। कोस्त्या ने मीश्का को और डराने के लिए दीवार को खटखटाना शुरू किया और वोला कि दरवाज़े पर कोई है। उसने यह सिलसिला इतना लंवा चलाया कि मैं भी कुछ डर गया और मैंने उसे इसे वंद करने को कहा।

आख़िर कोस्त्या ने शरारत करना वंद किया। मीश्का शांत हो गया और सो गया। लेकिन किसी कारण कोस्त्या को और मुझे नींद न आई। इतनी ख़ामोशी थी कि हम डिव्वे में मीश्का के गुवरैलों की सरसराहट सुन सकते थे। कमरा विलकुल काल-कोठरी सा काला था, क्योंकि खिड़कियां वंद थीं। हम काफ़ी देर तक अंधेरे में ख़ामोशी को सुनते और एक-दूसरे से फुसफुसाकर वात करते पड़े रहे। आख़िर खिड़कियों के दरवाज़ों से रोशनी की हलकी सी दमक आई। पौ फट रही थी। मैं ज़रूर ऊंघ गया था, क्योंकि मैं किसी की खटखटाहट सुन चौंककर उठ वैठा।

खट-खटा-खट! खट-खटा-खट!

मैंने कोस्त्या को जगाया।

"दरवाज़े पर कोई है।"

"कौन हो सकता है?"

"श्-श्! सुनो!"

मिनट भर बिलकुल खामोशी रही। फिर वही आवाज़ आई–खट-खटा-खट!

"हां," कोस्त्या ने कहा, "कोई खटखटा रहा है। कौन हो सकता है यह?"

हम सास रोके इंतज़ार करते रहे। खटखटाहट नही आई और हमने सोचा कि हमने उसे सपने में सुना था।

और तभी हमने फिर सुना–खट-खटा-खट! खट-खटा-खट!

"श्-श्," कोस्त्या फुसफुसाया, "ऐसा दिखाओ कि जैसे हम सुन ही नही रहे है। शायद वे चले ही जायें।"

हमने कुछ देर इतजार किया, और खटखटाहट फिर सुनाई दी–खट-खटा-खट!

"हे भगवान! वे तो अभी भी यहां के यही है!" कोस्त्या ने कहा।

"कोई शहर से तो नहीं आया?" मैंने कहा।

"इस वक्त कौन आ सकता है? न, चुपचाप पड़े रहो और इतजार करो। अगर उन्होंने फिर खटखटाया, तो हम पूछेंगे कि कौन है।"

हम इंतज़ार करने लगे, पर किसी ने नही खटकाया।

"चले गये होंगे," कोस्त्या ने कहा।

हमे तसल्ली हुई ही थी कि खटखटाहट फिर आने लगी–खट-खटा-खट!

मैं चौंक पड़ा और बिस्तर मे बैठ गया। "आओ," मैंने कहा, "चलो, चलकर पूछते है कि कौन है।"

हम सरकते हुए दरवाज़े पर गये।

"कौन?" कोस्त्या ने कहा।

कोई जवाब न मिला।

"कौन है?" कोस्त्या ने दुहराया–इस बार ज़ोर से।

खामोशी।

"कौन है?"

कोई जवाब नही। "चले गये होंगे," मैंने कहा।

हम वापस आ गये। हम बिस्तर पर पहुचे ही थे कि.

खट-खटा-खट! खट-खटा-खट!

हम दरवाज़े पर लपके। "कौन है?"

ख़ामोशी।

"वह बहरा है या क्या?" कोस्त्या ने कहा। हम खड़े होकर सुनते रहे। हमें लगा कि हमने बाहर कुछ सरसराहट सुनी है।

"कौन है?"

किसी ने जवाब नहीं दिया।

हम लौटकर पलंगों पर चले गये और सांस रोककर बैठ गये। अचानक हमने अपने ऊपर की छत पर सरसराहट सुनी और फिर कोई चीज़ टीन पर धमाके के साथ गिरी।

"वे लोग छत पर चढ़ गये हैं," कोस्त्या बोला।

धम! धमाधम! धम! इस बार आवाज़ छत के दूसरे कोने से आई।

"लगता है कि वे दो हैं," मैंने कहा। "मुझे तो यही समझ में नहीं आता कि वे छत पर कर क्या रहे हैं!"

हम पलंग से उछलकर कूद पड़े और दूसरे कमरे का दरवाज़ा बंद कर दिया, जिससे छत पर जाया जा सकता था। हमने खाने की मेज़ को खिसकाकर दरवाज़े से लगा दिया और उससे एक छोटी मेज़ को और उस मेज़ से एक पलंग को सटा दिया। लेकिन छत से धमाधम की आवाज़ आती ही रही—कभी इधर से, तो कभी उधर से और कभी दोनों तरफ़ से एक साथ। लगता था कि वे तीन हैं। और तभी किसी ने फिर दरवाज़े को खटखटाना शुरू कर दिया।

"शायद कोई यह हमें डराने के लिए ही कर रहा है," मैंने कहा।

"हमें बाहर जाकर उन पर टूट पड़ना चाहिए और हमें जगाये रखने के लिए उनकी अच्छी ठुकाई करनी चाहिए," कोस्त्या ने कहा।

"ठुकाई तो वे हमारी कर देंगे। वे गिनती में कितने भी हो सकते हैं।"

इस तमाम अरसे में मीश्का मज़े में सो रहा था। उसे कुछ भी न सुनाई दिया।

"उसे जगा देना चाहिए," मैंने राय दी।

"न, उसे सोने दो," कोस्त्या ने कहा। "जानते ही हो कि वह कितना डरपोक है। डर के मारे उसकी हवा खिसक जायेगी।"

जहां तक हमारी बात है, नींद के मारे हमसे खड़ा नहीं हुआ जा रहा था। आख़िर कोस्त्या और न बरदाश्त कर सका। पलंग पर चढ़कर वह बोला:

"मै इस बकवास से आजिज़ आ गया हूं। मेरी तरफ से वे छत पर अपनी गरदनें तोड ले। मै तो सो रहा हूं।"

मैंने मीश्का के तकिये के नीचे मे छुरा खीचा और उसे अपनी बग़ल मे रख लिया और लेटकर सोने की कोशिश करने लगा। ऊपर से आनेवाला शोर धीरे-धीरे कम होता गया, यहा तक कि वह टीन पर गिरती बूदों की तरह सुनाई देने लगा। मुझे नींद आ गई।

मेरी आख दरवाज़े पर जोरो की भड़भडाहट से खुली। दिन का चटक उजाला फैल गया था और बाहर आंगन से वडा शोर आ रहा था। मैंने छुरा उठाया और दरवाज़े पर लपका।

"कौन?" मैंने चिल्लाकर पूछा।

"दरवाज़ा खोलो, छोकरो! क्या हुआ तुम्हे? हमे खटखटाते आधा घटा हो गया।" यह वीत्या था, हमारा पायनियर नायक!

मैंने दरवाज़ा खोला और लडके भीतर घुस आये। वीत्या की निगाह छुरे पर पड़ी।

"यह किसलिए?" उसने पूछा। "और यहा इस वाड़ का क्या मतलब?"

कोस्त्या और मैंने रात जो गुज़री थी, उसका किस्सा सुनाया। लेकिन लडको को हम पर यकीन न आया। उन्होंने हमारी खिल्ली उड़ाई और कहा कि हमने डर के मारे इन बातो को सोच लिया होगा। कोस्त्या को और मुझे इतना गुस्सा आया कि हम रो ही पड़ते।

तभी ऊपर से फिर खटखटाहट की आवाज़ आई।

"चुप!" कोस्त्या ने कहा और अपनी उंगली उठाई।

लडके चुप हो गये। खट-खटा-खट! खटखटाहट की आवाज़ साफ सुनाई दी। लडको ने एक-दूसरे की तरफ देखा। मै और कोस्त्या दरवाज़ा खोलकर बाहर गये। और भी पीछे-पीछे आ गये। हमने मकान से कुछ दूर जाकर छत की तरफ देखा। उस पर एक मामूली कौआ बैठा था। वह किसी चीज़ पर ठोंग मार रहा था और टीन की छत पर उसकी चोंच से "टप-टप-टप" की आवाज हो रही थी।

जब लड़को ने कौए को देखा, तो वे खिलखिलाकर हस पडे और कौआ डर के मारे अपने पख फड़फड़ाकर उड़ गया।

कई लड़के एक सीढ़ी ले आये और छत पर चढ गये।

"छत पिछले साल के र्‌यबीना के फलों से अटी पड़ी है!" उन्होंने चिल्लाकर हमसे कहा। "कौआ उन्हीं पर ठोंग मार रहा था।"

र्‌यबीना के फल वहां आये कहां से, हम इसी पर हैरानी करने लगे। हमने देखा कि र्‌यबीना के पेड़ों की शाखाएं मकान के ऊपर छाई हुई थीं। शरद में पकने पर र्‌यबीना के फल सीधे छत पर ही टपकते होंगे।

"लेकिन फिर दरवाज़े को किसने खटखटाया?" मैंने कहा।

"हां," कोस्त्या ने कहा। "कौए क्या कर रहे थे—हमारे दरवाज़े पर ठोंग मार रहे थे, है न? मेरे ख़याल में तुम यह कहोगे कि वे भीतर आकर रात हमारे साथ काटना चाहते थे।"

इसका जवाब कोई न दे सका। सब दरवाज़े को देखने के लिए लपके। वीत्या ने देहली पर से एक र्‌यबीना का फल उठाया।

"उन्होंने दरवाज़े को खटखटाया ही नहीं। वे तो देहली पर से र्‌यबीना के फल चुग रहे थे और तुमने यह समझ लिया कि वे दरवाज़ा खटखटा रहे हैं।"

हमने देखा और सचमुच, देहली पर र्‌यबीना के कुछ फल पड़े हुए थे।

लड़कों ने हमारी ख़ूब हंसी उड़ाई। "देखा न, कितने बहादुर हैं ये लोग! तीन-तीन लोग एक कौए से डर गये!"

"हम सिर्फ़ दो थे," मैंने कहा। "मीश्का इस तमाम वक़्त में सोता रहा था।"

"बहुत अच्छे, मीश्का!" लड़के चिल्लाये। "तो तुम्हीं अकेले ऐसे थे, जिसे कौए से डर नहीं लगा?"

"मुझे किसी का भी डर नहीं लगा," मीश्का ने कहा। "मैं तो सो रहा था और मैंने कुछ भी नहीं सुना।"

तभी से मीश्का को बहादुर माना जाता है और मुझे और कोस्त्या को डरपोक।
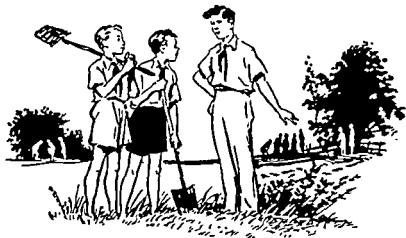
बाग़बान

पिछली गरमियों में हमारे पायनियर शिविर पहुंचने के एक या दो दिन बाद हमारे पायनियर दल के नायक वीत्या ने कहा कि हम लोग सब्जियों का अपना बाग़ लगायेंगे। हम सब इस बात पर विचार करने के लिए जमा हुए कि काम का संगठन किस तरह किया जाये और क्या-क्या सब्जियां बोई जायें। यह तय हुआ कि बाग़ को छोटे-छोटे टुकड़ों में बांट दिया जाये और हर टुकड़ा दो-दो पायनियरों की टोली के सुपुर्द कर दिया जाये। सबसे अच्छे टुकड़े के लिए होड़ होगी और जीतनेवाली टोली को इनाम मिलेगा। आगे निकली हुई टोलियां पिछड़ी हुई टोलियों की मदद करेंगी, जिससे ज़मीन की बुआई अच्छी तरह हो और अच्छी फसल मिले।

मीश्का ने और मैंने एक ही टोली में रखे जाने के लिए कहा। शिविर में आने के पहले ही हम लोगों ने तय कर लिया था कि हम साथ-साथ काम करेंगे, साथ-साथ मछली पकड़ेंगे और हर बात में साथ-साथ रहेंगे।

वादिक त्सेव ने राय दी कि सवसे पहले खुदाई ख़त्म करनेवाली टोली को एक ललकार-पताका प्रदान की जाये। सवने यह वात मंजूर कर ली और यह तय हुआ कि यह पताका फिर सवसे अच्छी वुआई करनेवालों को और इसके वाद सवसे अच्छी निराई करनेवाली टोली को मिलेगी। पताका को शहर वही टोली लेकर जायेगी, जिसकी फ़सल सवसे अच्छी होगी।

मीश्का ने और मैंने इस पताका को जीतने की ठान ली।

"हम इसे शुरू-शुरू में ही जीत लेंगे और गरमियों भर इसे हाथ से न जाने देंगे और यह हमारे साथ शहर जायेगी," मीश्का ने कहा।

हमें नदी के पास ज़मीन का एक टुकड़ा दिया गया था। हमने उसे मापा, उसमें प्लॉटों के निशान डाले और नंवर लिखी लकड़ी की तख्तियां उनमें ठोक दी। मीश्का को और मुझे प्लॉट नं० १२ मिला था। मीश्का को संतोप नहीं हुआ। वह वीत्या के पास यह शिकायत लेकर गया कि हमें सवसे ख़राव प्लॉट दिया गया है।

"सवसे ख़राव क्यों?" वीत्या ने पूछा।

"उसमें वीच में गड्ढा है!"

"तो क्या हुआ!" वीत्या ने हंसकर कहा। "फिर, यह कोई गड्ढा नहीं है, यह तो घोड़े की नाल का निशान है।"

"उसमें पेड़ का ठूंठ है," मीश्का ने वड़वड़ाकर कहा।

"दूसरे प्लॉटों में भी तो हैं।"

लेकिन मीश्का सुने, तभी तो।

"उसे उखाड़ना होगा," उसने ग़ुस्से में कहा।

"ठीक है, तो जाओ और उसे उखाड़ फेंको। तुम्हें मदद चाहिए, तो और लोग हाथ वटा देंगे।"

"शुक्रिया, हम लोग अपने-आप निपट लेंगे," मीश्का ने तेज़ी में कहा। "और इसके अलावा औरों को भी मदद दे देंगे।"

"यही भावना चाहिए!" वीत्या वोला।

हर किसी ने खुदाई शुरू कर दी। हम दोनों भी जुट गये। लेकिन ज़रा-ज़रा सी देर वाद मीश्का औरों के पास लपककर जाने और यह देखने के लिए कि उन्होंने कितनी खुदाई की है, वार-वार खुदाई वंद कर देता।

"अगर तुम ऐसे ही काम करते रहे, तो जल्दी ही हम औरों से पिछड़ जायेंगे," मैंने कहा।

"ठीक कहते हो," उसने कहा। "मैं अभी उन्हें पकड लेता हूं।"

उसने पकडना शुरू किया, लेकिन जरा ही देर बाद वह फिर चल पड़ा।

उस दिन हम ज्यादा काम न कर सके, क्योंकि जल्दी ही खाने की घंटी बज गई। मीश्का और मैं खाने के बाद अपने प्लॉट पर आना चाहते थे, लेकिन वीत्या ने हमें रोक दिया।

"एक दिन के लिए इतना ही काफी रहेगा। हम सुबह के समय ही काम किया करेंगे। खाने के बाद हम आराम करेंगे। नही तो तुम मे से कुछ लोग पहले दिन बस के बाहर काम कर डालेगे और फिर बाकी समय कुछ न कर पायेंगे।"

अगली सुबह मीश्का और मैं अपने प्लॉट पर औरों के पहले पहुंच गये और खुदाई करने लगे। कुछ देर के बाद मीश्का ने वीत्या से नापने का फीता लिया और यह देखने के लिए नापने लगा कि हमने कितना खोद लिया है और कितना बाकी रह गया है। इसके बाद उसने कुछ खुदाई और की और इसके बाद फिर नापने लग गया। और हर बार नापने पर उसने यही पाया कि हमने काफी खुदाई नही की है।

"बेशक हमने काफी खुदाई नही की है," मैंने कहा, "क्योंकि खुदाई अकेला मैं ही कर रहा हूं। तुम तो बस नपाई ही कर रहे हो।"

मीश्का ने फीता फेंक दिया और फिर खुदाई करने लगा। लेकिन उसने अभी थोडी ही खुदाई की थी कि उसका फावड़ा एक जड़ मे जा लगा और वह खुदाई रोक उसे खीचकर उखाड़ने मे लग गया। उसने बहुतेरा जोर लगाया, पर वह ज़रा भी न खिची। उसे बाहर निकालने की कोशिश मे उसने पूरे के पूरे प्लॉट को और बराबरवाले प्लॉट के एक हिस्से को भी खंगाड़ डाला।

"उसे मत छेड़ो!" मैंने कहा। "तुम उसके पीछे क्यों माथापच्ची कर रहे हो?"

"मुझे क्या पता था कि यह आध मील लंबी है?"

"तो होने भी दो।"

"लेकिन कही न कही तो यह खत्म होगी ही न?"

"इससे तुम्हें क्या फर्क पडता है?"

"मैं ऐसा आदमी नहीं हूं। मैं अगर किसी चीज़ मे हाथ डालता हू, तो उसे खत्म किये बिना नही छोड़ता।"

और वह फिर दोनों हाथों से जड़ को उखाड़ने में लग गया। मुझे गुस्सा आ गया। मैंने जड़ के पास जाकर अपने फावड़े से उसे काट दिया। मीश्का ने फ़ीता लिया और उसे नापा।

"देखा तुमने!" उसने कहा। "पूरी साढ़े छः मीटर! अगर तुमने इसे काट न दिया होता, तो यह बीस मीटर की भी निकल सकती थी।"

मैंने कहा, "अगर मुझे मालूम होता कि तुम काम करने के बजाय मटरगश्ती ही करोगे, तो मैं तुम्हारे साथ शामिल नहीं होता।"

"जाओ, चाहो तो अकेले काम करो। मैं कब तुम्हें अपने साथ काम करने के लिए मजबूर कर रहा हूं!"

"ज़्यादातर प्लॉट की अकेले ही खुदाई कर लेने के बाद? ऐसा कुछ नहीं होगा। लेकिन ख़त्म करने में अव्वल हम किसी भी हालत में नहीं होंगे।"

"कौन कहता है कि हम नहीं होंगे? वान्या लोज़्किन और सेन्या बोब्रोव को देखो। उन्होंने तो हमसे भी कम खोदा है।"

वह वान्या लोज़्किन के प्लॉट पर गया और उन पर फबतियां कसने लगा:

"बड़े आये खुदाई करनेवाले! जल्दी ही हमें आकर तुम्हारी मदद करनी पड़ेगी।"

लेकिन उन्होंने उसे भगा दिया। "जाओ और जाकर काम करो, वरना मदद करनेवाले हम होंगे।"

मैंने कहा, "तुम्हारा भी जवाब नहीं है—ख़ुद मियां फ़ज़ीहत, दूसरे को नसीहत! मुझे इसी बात का दुख है कि मैं तुम्हारे साथ शामिल हो लिया।"

"परवाह मत करो," उसने कहा। "मुझे एक ज़ोरदार बात सूझी है। कल पताका हमारे ही प्लॉट पर होगी—तुम देख लेना।"

"तुम तो पागल हो," मैंने कहा। "अभी तो इस प्लॉट पर पूरे दो दिन का काम बाक़ी है, और तुम्हारा यही ढब रहा, तो इसमें चार दिन लग जायेंगे।"

"तुम देख लेना। मैं अपना विचार तुम्हें बाद में बताऊंगा।"

"ठीक है, लेकिन अब काम शुरू करो। ज़मीन अपने-आप नहीं ख़ुद जायेगी।"

उसने खुदाई शुरू करने के लिए अपना फावड़ा उठाया, लेकिन तभी वील्या ने आकर कहा कि खाने का समय हो गया है, इसलिए उसने फावड़ा अपने कंधे पर डाला और आगे-आगे भोजनालय की तरफ़ चल पड़ा।

खाने के बाद हम सबने पताका बनाने मे वीत्या की मदद की। हम उसकी छड़ बनाने के लिए एक लकड़ी लाये, कपड़े को काटा और सीया और छड़ को सुनहरा रगा। वीत्या ने पताका पर रुपहरे अक्षरों में लिखा "सर्वोत्तम बागवान"। पताका बड़ी सुंदर लग रही थी।

मीश्का ने कहा, "अपने बाग से कौओं को भगाने के लिए हमे एक काकभगौड़ा भी बनाना चाहिए।"

हर किसी को यह विचार बहुत पसंद आया। हम एक डंडा लाये, उसके आरपार बाहों की जगह एक डंडा बाधा, कमीज़ के लिए एक पुराना थैला ले आये और ऊपर सिर की जगह एक घडा लगा दिया। मीश्का ने घडे पर कोयले से आंखें, नाक और मुंह बना दिये और हमारा काकभगौडा तैयार हो गया। और वह था भी सचमुच डरावना! हम बाग के बीच में खडे होकर उसे देखकर खूब ही तो हंसे।

मुझे अलग ले जाकर मीश्का ने मेरे कान में कहा, "यह है मेरी तरकीब। आज रात को जब सब सो जायेंगे, हम लोग जाकर अपना सारा प्लॉट खोद डालेंगे—बस एक ज़रा से टुकड़े को छोड़कर, जिसे हम कल आसानी से ख़त्म कर देंगे। तब तो हम पताका जीत ही लेंगे।"

"तुम काम करो, तभी न," मैंने कहा। "लेकिन तुम सभी तरह की फ़ालतू की बकवास करते रहे, तो!"

"इस बार मैं दीवानों की तरह काम करूंगा, तुम देख लेना।"

"ठीक है। लेकिन अगर तुमने नही किया, तो मैं भी नहीं करूंगा।"

उस रात को मैं और मीश्का औरों के साथ ही साथ जाकर सो गये। लेकिन हम सोने का बहाना ही कर रहे थे। जब पूरी तरह ख़ामोशी छा गई, तो मीश्का ने मेरी पसलियों में उंगली गड़ाई। मैं अभी-अभी ही ऊंघा था। "उठो," उसने जोर से फुसफुसाकर कहा। "हमें चल पड़ना चाहिए, नही तो पताका को जैरामजी की करनी पड़ेगी।"

हम शयनागार से पाव दबाये खिसक आये, अपने फावड़े उठाये और अपने प्लॉट की तरफ़ लपके। खूब चादनी रात थी और हर चीज़ साफ़-साफ़ नज़र आ रही थी।

कुछ ही मिनटों मे हम प्लॉट पर पहुंच गये।

"लो, हम आ गये," मीश्का ने कहा। "यह रहा अपना प्लॉट। मैं बीच मे खडे ठूठ से ही बता सकता हूं।"

हमने काम शुरू कर दिया। इस बार मीश्का ने सचमुच काम किया और जल्दी ही हमने ठूंठ तक की खुदाई कर डाली। हमने उसे उखाड़ फेंकने की ठान ली। हमने उसके चारों तरफ़ की मिट्टी को ढीला किया और अपने पूरे ज़ोर से उसे खींचा, लेकिन हम उसे हिला भी न पाये। हमें जड़ों को अपने फावड़ों से काटना पड़ा। मेहनत बहुत करनी पड़ी, लेकिन आख़िर हमने उसे निकाल ही लिया। फिर हमने ज़मीन को समतल किया और मीश्का ने ठूंठ को बराबरवाले प्लॉट में फेंक दिया।

"यह अच्छी बात नहीं है," मैंने कहा।

"फिर हम इसे डालें कहां?"

"कम से कम अपने पड़ोसी के प्लॉट में तो नहीं।"

"ठीक है। तो चलो, इसे नदी में फेंके देते हैं।"

हमने उसे उठाया और नदी तक ले गये। वह बहुत भारी था और हमें बड़ी मुसीबत झेलनी पड़ी। लेकिन आख़िर हम उसे किनारे तक ले ही आये और उसे छपाक् के साथ पानी में फेंक दिया। वह नदी में अष्टपाद की तरह बह गया – उसकी जड़ें उसके चारों तरफ़ उसी की तरह निकली हुई थीं। हम उसे तब तक देखते रहे जब तक वह आंख से ओझल नहीं हो गया और फिर घर लौट आये। हम इतने थके हुए थे कि उस रात को अब और खुदाई नहीं कर सकते थे। फिर, खोदने को रह भी तो ज़रा सा टुकड़ा ही गया था।

सुबह हम औरों से कुछ बाद में उठे। हे भगवान! अंग-अंग में कैसा दर्द हो रहा था! हमारी बाहें दुख रही थीं, हमारी टांगें दुख रही थीं और कमर तो लगता था कि अब टूटी, अब टूटी!

"क्या हो गया है हमें?" मीश्का ने कहा।

"एक साथ बहुत खुदाई जो की है," मैंने कहा।

थोड़ा चलने-फिरने के बाद हमारी तबीयत कुछ संभली और नाश्ते के समय तो मीश्का हांकने भी लगा कि पताका हमें ही मिलेगी।

नाश्ते के बाद सभी बाग़ को चल दिये। मीश्का और मुझे ज़रा भी जल्दी न थी। हमारे पास तो काफ़ी वक़्त था न!

हमारे प्लॉटों पर पहुंचते-पहुंचते सभी चींटियों की तरह जुट चुके थे। उनके पास से गुज़रते समय हम उन पर ख़ूब हंसे।

"काम करो इसके बजाय तुम भी!" उन्होंने बदले में कहा।

तभी मीश्का ने कहा, "ज़रा इस प्लॉट को तो देखो। पता नहीं, किसका है। अभी ज़रा भी खुदाई नहीं की है। सो रहे होंगे घर पर लंबी ताने!"

मैंने तख़्ती को देखा। नं० १२। "वाह, यह तो अपना प्लॉट है!"

"हो नहीं सकता," मीश्का ने कहा। "हम इससे कहीं ज्यादा खोद चुके हैं।"

मेरा भी यही ख़याल था।

"हो सकता है कि किसी ने शरारत में तख़्तियां बदल दी हों।"

"नहीं, यह बात नहीं है। और सभी नंबर ठीक हैं। देखो, यह रहा नं० ११ और उधर न० १३।"

हमने फिर निगाह डाली और बीच में खड़े एक ठूंठ को देखा। हमें अपनी आखों पर विश्वास न आया।

"सुनो," मैंने कहा। "अगर यह हमारा प्लॉट है, तो यह ठूंठ यहां क्या कर रहा है? हमने तो उसे उखाड़ फेंका था, नहीं न?"

"बेशक उखाड़ दिया था," मीश्का ने कहा। "रात भर में उसकी जगह नया तो उग नहीं सकता था।"

तभी हमने अपने बराबरवाले प्लॉट पर वान्या लोज्किन को कहते सुना:

"देखो, देखो! सचमुच का जादू! कल यहां एक बड़ा ठूंठ था, और आज गायब! कहां गया वह?"

हर कोई इस जादू को देखने लपका। मैं और मीश्का भी गये।

हुआ क्या था? कल तक उनका प्लॉट आधे से भी कम खुदा था और अब, बस ज़रा सा कोना ही रह गया था।

"मीश्का," मैंने कहा। "जानते हो क्या बात है? रात हमने जो प्लॉट खोदा, वह इनका था। और हमने जो ठूंठ उखाड़ा, वह भी इन्हीं का था।"

"ऐसा नहीं हो सकता।"

"लेकिन हो तो गया!

"उफ़, हम भी कैसे गधे हैं!" मीश्का ने दुखी होकर कहा। "अब हम क्या करेंगे? इंसाफ़ की बात तो यही है कि उन्हें अपना प्लॉट हमें दे देना चाहिए और हमारा ख़ुद ले लेना चाहिए। सारी मेहनत बेकार!"

"बको मत," मैंने कहा। "अपनी तुम जग-हंसाई तो नहीं करवाना चाहते न, नहीं न?"

"लेकिन हम करेंगे क्या?"

"खोदो," मैंने कहा। "दीवानों की तरह खोदो।"

हमने अपने फावड़े उठाये। लेकिन हमने जब खुदाई शुरू की, तो हमारे बेचारे हाथ-पैरों और कमर में इतना दर्द हुआ कि हमें रोकना पड़ा। हमने अपने पड़ोसी के प्लॉट पर इतना सख़्त काम कर लिया था कि अब हममें अपना काम ख़त्म करने की ताक़त न थी।

जल्दी ही वान्या लोज़्किन और सेन्का वोब्रोव ने अपने प्लॉट की खुदाई ख़त्म कर दी। वीत्या ने उन्हें बधाई दी और पताका उनके सुपुर्द कर दी। उन्होंने उसे अपने प्लॉट के बीचोंबीच गाड़ दिया। सभी ने आस पास इकट्ठा होकर तालियां बजाईं। मीश्का से यह न सहा गया।

"यह ठीक नहीं है!" उसने कहा।

"क्यों, यह ठीक क्यों नहीं है?" वीत्या ने पूछा।

"किसी ने उनका ठूंठ उखाड़ दिया है। उन्होंने ख़ुद यह बात कही है।"

"तो क्या यह हमारा कसूर है?" वान्या ने कहा। "मान लो, कोई उसे जलाने के लिए ले गया। यह तो उसी के देखने की बात है, हमारे नहीं।"

"हो सकता है कि किसी ने ग़लती से ही उखाड़ दिया हो," मीश्का बोला।

"अगर ऐसा होता, तो वह कहीं आस पास ही पड़ा होता।"

"हो सकता है कि किसी ने उसे नदी में फेंक दिया हो," मीश्का कहता ही गया।

"हो सकता है, हो सकता है! तुम कहना क्या चाहते हो?"

लेकिन मीश्का से चुप न रहा गया।

"किसी ने रात में तुम्हारी खुदाई कर दी है," उसने कहा।

मैं उसे कुहनी मार-मारकर मुंह बंद करने के लिए कहता रहा। वान्या बोला:

"हो सकता है, किसी ने कर दी हो। हमने अपने प्लॉट को नापा नहीं था।"

हम अपने प्लॉट पर लौट आये और खुदाई करने लगे। वान्या और सेन्का खड़े-खड़े हमें देखते और फब्तियां कसते रहे।

"देखो इनको," सेन्का ने कहा। "कछुए की तरह सुस्त हैं ये लोग!"

"हमें इनकी मदद करनी पड़ेगी," वान्या ने कहा। "खुदाई में ये सभी से पीछे हैं।"

और इस तरह उन्होंने हमारा हाथ बटाया। उन्होंने खुदाई में हमारी मदद की और ठूंठ उखाड़ने में भी सहायता दी, लेकिन फिर भी हमारी खुदाई सभी के बाद पूरी हुई।

किसी ने काकभगौड़ा हमारे प्लॉट पर लगाने की राय दी, क्योंकि हमने सबसे बाद में काम खत्म किया था। हर किसी को यह विचार बहुत पसंद आया और इसलिए काकभगौड़ा हमारे प्लॉट पर आ गया। मीश्का को और मुझे बहुत बुरा लगा।

"अरे, हंसो भी!" लड़कों ने कहा। "अगर तुमने बुआई और निराई ठीक से की, तो हम इसे तुम्हारे प्लॉट से निकाल लेंगे।"

यूरा कोरलोव ने राय दी:

"यह उस टोली को दिया जाना चाहिए, जो बाकी काम में सबसे रद्दी निकले।"

"हां-हां, ठीक है!" औरों ने चिल्लाकर कहा।

"और शरद में हम इसे उस टोली को देंगे, जिसकी फसल सबसे बुरी होगी," सेन्का बोब्रोव ने कहा।

मीश्का ने और मैंने तय कर लिया कि सख्त मेहनत करेंगे, जिससे इस मनहूस काकभगौड़े से पीछा छूटे। लेकिन हमने लाख जतन किये, पर वह गरमियों भर हमारे ही प्लॉट पर विराजमान रहा। बुआई के वक्त मीश्का ने हर चीज़ को गड़बड़ा दिया और गाजर के बीजों के ऊपर चुकंदर बो दिये। और जब हमने निराई की, तो उसने घास की जगह पोदीना के सारे पौधे ही उखाड़ फेंके। और हमें उनके बजाय मूली लगानी पड़ी। मैंने कितनी ही बार अपने हाथ अलग करने की सोची, लेकिन यार को अधबीच में छोड़ने को मेरा मन नहीं माना। इसलिए मैं अन्त तक उसी के साथ बना रहा।

और यकीन करेंगे आप, कि आखिर मीश्का को और मुझे पताका मिल ही गई! हर किसी को यह देखकर अचरज हुआ कि खीरे और टमाटर की सबसे अच्छी फ़सल हमारी ही हुई।

इस पर तो झमेला ही मच गया!

"यह ठीक नहीं है," औरों ने कहा। "तमाम वक्त ये लोग औरों के पीछे थे और अब इन्हीं की फसल सबसे अच्छी रही! यह कैसे हो सकता है?"

लेकिन बीत्या ने कहा, "यह बिलकुल ठीक है। हो सकता है कि ये तुम सबसे पीछे थे, लेकिन इन्होंने मिट्टी की बढ़िया खुदाई की और इन्होंने कोशिश भी खूब की।"

वान्या लोस्किन ने कहा, "इन्हें ज़मीन अच्छी मिली, बात बस यही है। मुझे और सेन्का को बुरा प्लॉट मिला। इसीलिए हमारी फसल भी खराब हुई, वैसे मेहनत हमने भी खूब की थी। और ये लोग अपना पुराना काकभगौड़ा भी रख सकते हैं। वैसे भी गरमियों भर यह इन्हीं के पास रहा था।"

"हमें कोई इनकार नहीं," मीश्का ने कहा। "हम उसे ख़ुशी के साथ रखेंगे।"

हर कोई हंसा। मीश्का ने कहा, "यह काकभगौड़ा न होता, तो हमें पताका भी न मिलती!"

"सो कैसे?" सभी ने पूछा।

"क्योंकि इसने हमारे प्लॉट से कौओं को भगा दिया और इसीलिए हमें सबसे ज़्यादा फ़सल मिली। फिर, यह हमें लगातार यह भी याद दिलाता रहता था कि हमें सख़्त मेहनत करनी है।"

मैंने मीश्का से कहा, "इस पुराने काकभगौड़े का हम क्या करेंगे?"

"चलो, उसे नदी में फेंक देते हैं," मीश्का ने कहा।

हम काकभगौड़े को नदी पर ले गये और उसे पानी में फेंक दिया। हम उसको उसके फैले हुए हाथों के साथ बहते देखते रहे और उसे जल्दी बहाने के लिए हमने पानी में पत्थर फेंके। जब वह चला गया, तो हम शिविर लौट आये।

उस दिन ल्योशा कुरोचकिन ने मेरी और मीश्का की हमारे प्लॉट पर विजय पताका के साथ तसवीर खींची। इसलिए अगर आप हमारी तसवीर चाहें, तो हम ख़ुशी के साथ आपको भेज देंगे।

लीजिये, ये किताबें छप गईं!

मास्को के प्रगति प्रकाशन ने बालकों और किशोरों के लिए हिन्दी में निम्न पुस्तकें प्रकाशित की हैं:

न० नोसोव, 'स्कूली लड़के'।

हास्यरस के लेखक और बालकों के मनोभावों के बहुत अच्छे मर्मज्ञ के रूप में न० नोसोव की प्रतिभा इस पुस्तक में बहुत ही निखर कर सामने आई है। इस पुस्तक का नायक वीत्या मलेयेव और उसका मित्र कोस्त्या शिशकिन बहुत ही प्यारे और जिज्ञासु बालक हैं। वे बहुत-सी चीज़ों में आसानी से दिलचस्पी लेने लगते हैं, मगर पढ़ाई में नहीं, दूसरी ही चीज़ों में। वे या तो कुत्ते को गणित पढ़ाना चाहते हैं या फिर खुद ही मदारियों के करतब सीखने लगते हैं। इसी चक्कर में उन्हें बहुत-सी अटपटी और हास्यास्पद परिस्थितियों से दो-चार होना पड़ता है।

दूसरी मनोरंजक पुस्तक है **'तूफ़ानी टोली'**। ठहाकों से भरपूर इस पुस्तक के रचयिता हैं बाल-साहित्य के प्रसिद्ध लेखक **यू० सोतनिक**।

इस संग्रह में फुटबाल की टीम के बारे में 'तूफ़ानी टोली', कुत्तों को पहरेदारी के लिए सधानेवाले लड़कों के सम्बन्ध में 'उस्ताद', और अपने शिष्यों की जिज्ञासा के कारण बड़ी अटपटी परिस्थिति में पड़ जानेवाले बूढ़े अध्यापक के बारे में 'खोजी' नामक हास्यपूर्ण कहानियां शामिल हैं। ये कहानियां हंसा हंसा कर पेट में बल डाल देती हैं।

हमारे सम्मुख बालकों के लिए एक और शानदार पुस्तक – **'अकस्मात् मुठभेड़'** – रखी है। इसके लेखक हैं बाल-साहित्यकार, विख्यात प्रकृति-प्रेमी, शिकारी और प्रकृतिविज्ञ **व० बिआन्की**।

लेखक ने ये कहानियां किशोर प्रकृति-प्रेमियों को समर्पित की हैं। उन में वयस्क अनुभवी शिकारियों और प्रकृति-प्रेमी बालकों के विभिन्न साहसी कारनामों का वर्णन किया गया है। प्रकृति के साथ स्थायी सम्पर्क, सतर्कता-सजगता, अदम्य साहस और प्रकृति के नियमों की जानकारी को अमली शक्ल देने की क्षमता – यही वे गुण हैं जो इस पुस्तक के नायकों को उन कठिनाइयों पर क़ाबू पाने में सहायक होते हैं जिन से शिकारियों-खोजियों का वास्ता पड़ता है।

पुस्तक सचित्र है।

न० रादलोव की **'सचित्र कहानियां'** पुस्तक में रंग-बिरंगी तस्वीरें हैं, बरबस हंसानेवाली और सारपूर्ण। इन चित्रों को देखते हुए बालकों को मेंढकों, बिल्ली-बिल्लों, चूहों और अन्य जानवरों के बारे में बहुत-सी विनोदी कहानियां याद हो जायेंगी। छोटी-छोटी कवितायें चित्रों के अर्थ को अच्छी तरह समझने में सहायता देती हैं।

मास्को के प्रगति प्रकाशन ने हिन्दी में एक प्राचीन और जादूभरी रूसी लोक-कथा **'भूरा-कत्थई घोड़ा'** भी प्रकाशित की है। इस में बताया गया है कि कैसे अद्भुत भूरा-कत्थई घोड़ा दयालु लोगों की मदद करता है और दुष्ट तथा ईर्ष्यालुओं को दंड देता है।

यह पुस्तक प्रसिद्ध सोवियत चित्रकार तत्याना माव्रिना के रंगीन चित्रों से सुसज्जित है।

आप उक्त पुस्तकें व०/ओ० 'मेज्दुनारोद्नाया क्नीगा', मास्को (सोवियत संघ) से व्यापारिक सम्बन्ध रखनेवाली अपने देश की पुस्तक विक्रेता फ़र्मों से प्राप्त कर सकते हैं।